संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : ₹ ६
प्रकाशन दिनांक : १ अप्रैल २०१४
वर्ष : २३ अंक : १०
(निरंतर अंक : २५६)

श्री हनुमान जयंती

१४ व १५ अप्रैल (पढ़ें पृष्ठ ११)

बोलने को भी जो देखता है और न बोलने को भी देखता है, सुख को भी जो देखता है, दुःख को भी देखता है, तंदुरुस्ती को भी देखता है और बीमारी को भी जो देखता है उसको तू देख, इसीका नाम है **'ईश्वरत्व'**। तेरे ईश्वरत्व को तू जागृत कर तो तेरे जन्म और कर्म दिव्य हो जायेंगे भैया !

– पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

पूज्य बापूजी का अवतरण दिवस अर्थात्
विश्व सेवा-सत्संग दिवस : २० अप्रैल

विश्व सेवा जो कर रहे हैं बापूजी

जरा सोचिये...

निंदक कभी कर सकेंगे क्या ?

पूज्य बापूजी का दिव्य सत्संग

गौसेवा

मातृ-पितृ पूजन

विश्व सेवा-सत्संग दिवस : २० अप्रैल पर विशेष

वर्तमान में विश्व के सामने अनेक समस्याएँ विकराल रूप धारण किये हुए खड़ी हैं । इन समस्याओं का समाधान एवं विश्वमानव के जीवन का सर्वांगीण विकास भारतीय संस्कृति एवं अध्यात्म से ही सम्भव है । यह भलीभाँति जाननेवाले महापुरुष हैं पूज्य बापूजी ।

भौतिक वस्तुओं एवं भौतिक जीवन का आध्यात्मिकीकरण करने का संदेश देकर निष्काम सेवायोग के माध्यम से उसको साकार करनेवाले पूज्य बापूजी ने इन वैश्विक समस्याओं को हल करने का भगीरथ सफल प्रयास किया है । यह आज विश्वव्यापी अभियान का रूप ले चुका है । यहाँ तक कि उनके शिष्यगण महाराजश्री का अवतरण दिवस भी **'विश्व सेवा-सत्संग दिवस'** के रूप में पिछले अनेक वर्षों से मनाते आये हैं । और इसी दिन से इन सेवा-अभियानों का नवीनीकरण भी होता है । आइये, जानें उन समस्याओं और उनके हलस्वरूप कुछ अभियानों को ।

समस्या (१) : कलियुग में कुसंग के प्रभाव से मनुष्य अपना मुख्य उद्देश्य ईश्वरप्राप्ति भूलकर अशांति, कलह, तनाव, चिंता, बीमारियों तथा संसार की आपाधापी में ही सारा जीवन खपा रहा है ।

समाधान : सत्संगों द्वारा विश्वमानव की उन्नति

शास्त्रों के मर्मज्ञ पूज्य बापूजी स्वयं कष्ट सहकर एक दिन में ३-३, ४-४ स्थानों में भी लोगों को सत्संग-अमृत का पान कराते रहे हैं । बापूजी अपने सत्संगों में शांति-प्रेमयुक्त व तनावमुक्त जीवन जीने की सरल युक्तियाँ, लौकिक व पारलौकिक सफलताएँ पाने की कुंजियाँ और स्वस्थ रहने के आयुर्वेदिक व घरेलू उपाय बताते हैं । साथ ही मानव-जीवन के परम उद्देश्य 'ईश्वरप्राप्ति' का मार्ग अति सरल बनाकर लोगों को उस मार्ग पर चलाते भी हैं । करोड़ों लोगों का अनुभव है कि बापूजी के सत्संग से उनका जीवन उन्नत हुआ है ।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

जीवनोपयोगी सामग्रियों का वितरण

व्यसनमुक्ति अभियान

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलुगू, कन्नड़, अंग्रेजी, सिंधी, सिंधी देवनागरी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : २३ अंक : १०
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २५६)
प्रकाशन दिनांक : १ अप्रैल २०१४
मूल्य : ₹ ६
चैत्र-वैशाख वि.सं. २०७१

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास
संरक्षक : श्री जमनालाल हलाटवाला
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद -३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में
(१) वार्षिक : ₹ ६०/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ १००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ २२५/-
(४) आजीवन : ₹ ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में (सभी भाषाएँ)
(१) वार्षिक : ₹ ३००/-
(२) द्विवार्षिक : ₹ ६००/-
(३) पंचवार्षिक : ₹ १५००/-

अन्य देशों में
(१) वार्षिक : US $ २०
(२) द्विवार्षिक : US $ ४०
(३) पंचवार्षिक : US $ ८०

ऋषिप्रसाद (अंग्रेजी)

	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारतमें	७०	१३५	३२५
अन्यदेशोंमें	US $ 20	US $ 40	US $ 80

सम्पर्क

'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.).
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८.
e-mail: ashramindia@ashram.org
web-site: www.rishiprasad.org
www. ashram.org

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

संस्कृति की रक्षा व सेवा के लिए संगठित हो जाओ

- पूज्य बापूजी

(२६ फरवरी २००६ को नासिक में किया गया सत्संग)

मेरे से किसीने पूछा : ''जयेन्द्र सरस्वती महाराज को आपने कैसे बुलाया ? उन पर तो आरोप था !''

अरे, वे निर्दोष, सज्जन संत ! मैंने उनको हृदयपूर्वक, अच्छी तरह से परखा है। वे ऐसा कर नहीं सकते और अभी झूठा आरोप तो किसी पर भी लग जाता है, उन पर भी झूठा आरोप है तो क्या मैं उनको संत की नजर से न देखूँ ? क्या आज फैशन नहीं बन गया झूठे केस बनाना ?

मेरे हृदय की आवाज थी कि 'ये निर्दोष व्यक्ति अगर धर्मांतरण करनेवालों को अड़चनरूप होने से जेल चले जाते हैं या दोषी करार दिये जाते हैं तो हमारी संस्कृति का क्या होगा ? हमारे देश का क्या होगा ?' मुझे लगा कि जयेन्द्र सरस्वती पर जुल्म हो रहा है। मेरा उनसे पहले कोई परिचय नहीं था लेकिन मेरे अंतरात्मा की आवाज थी इसलिए मैं जाकर सड़क पर बैठ गया।

जब जयेन्द्र सरस्वतीजी पर आरोप लग सकते हैं... और उनका वकील कहता है कि 'ऐसा बोगस केस मैंने अपनी पूरी जिंदगी में नहीं देखा...' इतने प्रसिद्ध व्यक्ति पर भी झूठे आरोप लग सकते हैं तो महाराज ! जिन बेचारे साधुओं की वकील करने की ताकत नहीं है, दौड़-धूप करने की ताकत नहीं है, ऐसे साधुओं और धर्म के छोटे-मोटे प्रचार करनेवालों के साथ तो कितना जुल्म हो रहा है। हे भगवान ! उन बेचारे निर्दोष लोगों पर जुल्म न हो। हमारी संस्कृति के पहरेदार फँसाये न जायें खामखाह झूठे केसों में ! हे भोलेनाथ ! सबको सद्बुद्धि दो।

आपस में संगठित हो जाओ। जुल्म करना पाप है, जुल्म सहना दुगुना पाप है।

धर्मो रक्षति रक्षितः। हिन्दुस्तानी अपनी संस्कृति की सेवा नहीं करेंगे, अपने धर्म की रक्षा हम लोग नहीं करेंगे तो क्या विदेशी आकर हमारी हिन्दू संस्कृति का, भारतीय संस्कृति का रक्षण करेंगे ? वे तो आपकी संस्कृति को तोड़कर, आपको डराकर राज्य करने के स्वप्न देख रहे हैं। आपके देश को खंडित करके अलग-अलग राज्य और अलग-अलग देश बनाने के स्वप्न देख रहे हैं। क्या आप अब भी सोये रहोगे ? नहीं। आप

सावधान रहो, जगो । अपने पड़ोस के भाई धर्मांतरित होते हैं तो उनको घर-वापसी लाने का कार्यक्रम बनाओ। हमारे हिन्दुस्तान के जो लोग बहकावे में आकर धर्मांतरित हो गये, वे अगर हमारे शिवमंदिर में फिर से आते हैं तो हमें खुशी है । वे अपनी भूल को सँवारने के लिए यदि आने को तैयार हो जाते हैं घर-वापसी कार्यक्रम में तो हम सभीको मिलकर उन बेचारों को घर-वापसी कार्यक्रम में ले आना चाहिए। अपने-अपने इलाके में यज्ञ करके, पूजा करके उनको फिर वापस अपने धर्म में लाना चाहिए । ये हम सभी हिन्दुस्तानियों का कर्तव्य है।

किसीके साथ जुल्म होता है, अन्याय होता है या झूठे केस होते हैं तो संगठित होकर उसकी मदद करो। अब कहाँ उनका चेन्नई और कहाँ अहमदाबाद ! मेरा दिल पिघला, व्यथित हो गया तो कहीं अनर्थ होने पर आपका दिल भी पिघलेगा । जहाँ भी सुनाई पड़े कि 'ऐसा यहाँ ठीक नहीं हो रहा है' अथवा अपनी अंतरात्मा बोले, परिस्थिति बोले तो आप यथायोग्य उसको सहयोग करो, मदद करो । बहुत बेचारे निर्दोष लोग फँसाये जाते हैं, सेटिंग हो जाती है।

कुछ लोग मेरे को बोलते हैं कि 'उन पर तो आरोप हैं...' अरे, निर्दोष आदमी फँस गया है और उनको हम हृदयपूर्वक निर्दोष मानते हैं, उनको हमने बुलाया है तो अपने आत्मसंतोष के लिए बुलाया है, हमें किसीकी परवाह नहीं करनी है। निंदा-स्तुति को हम चरणों तले रख देते हैं, हमने अपना कर्तव्य निभाया है। भारतीय संस्कृति का एक संत झूठे-मूठे केस में अपराधियों की श्रेणी में धकेला जाय और हम चुप बैठें तो फिर हमारा बापूजी होना या संत होना क्या काम का होता है ?

गुरु तेगबहादुर बोलिया,
सुनो सिखो बड़भागियाँ ।
धड़ दीजिये धर्म न छोड़िये ॥
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ।

अपने धर्म में मर जाना कबूल है, दूसरे का धर्म दुःखदायी, भयावह (भय को देनेवाला) है। मैं अपना धर्म क्यों छोड़ूँ ? ॐ ॐ ॐ... आत्मशक्ति गुंजाओ।

अपनी सनातन संस्कृति की विशेषता विदेशी लोग गा रहे हैं। फ्रांस के विद्वान रोमां रोलां ने कहा है : ''मैंने यूरोप और एशिया के सभी धर्मों का अध्ययन किया है परंतु मुझे उन सबमें हिन्दू धर्म ही सर्वश्रेष्ठ दिखायी देता है। मेरा विश्वास है कि इसके सामने एक दिन समस्त जगत को सिर झुकाना पड़ेगा।'' चीन की दीवार, कुवैत का पेट्रोलियम और अमेरिका के डॉलर मशहूर हैं लेकिन भारतीय संस्कृति और भारत के संत आत्मा से मुलाकात कराने की योग्यता में अभी भी विश्व में मशहूर हैं, आप क्या समझ रहे हैं !

भारत के संत-महापुरुष खाली हाथ जाते हैं और उनको चेला बनाकर आ जाते हैं, यह क्या चमत्कार देखते हो ! यह भारतीय संस्कृति का प्रसाद ही तो है; नहीं तो जो लोग हमारे देश को नोचने आये थे, वे हमारे चेले कैसे बनेंगे ? और अभी भी हजारों-हजारों विदेशी इधर आ जाते हैं भारत के संतों-महापुरुषों के पास । क्यों आते हैं ? कि हमारी संस्कृति शांति देने में, ज्ञान देने में, सब कुछ देने में सक्षम है। सभी धर्मों के लिए हमें स्नेह है, धन्यवाद है, प्रेम है लेकिन भारतीय संस्कृति, मेरी मातृभूमि भारत देश ने दुनिया को जो दिया है... दुनियावालों ने तो यहाँ आकर भारत का शोषण किया है लेकिन भारत के संतों ने और भारत के लोगों ने दुनिया में जाकर क्या-क्या किया है !

'पार्लियामेंट ऑफ वर्ल्ड रिलीजन्स' में मैंने गर्जना कर डाली थी कि हमारे देश के आदमी अमेरिका या और देशों में जहाँ भी गये हैं, बेचारे दूध में शक्कर की नाईं घुल-मिल गये हैं और अपने-अपने क्षेत्र में खूब परिश्रम किया है । कम्प्यूटर के क्षेत्र में, इसमें-उसमें... अगर भारतवासियों का परिश्रम नहीं होता तो वे देश आज इतने उन्नत नहीं होते। यह भारत का दिमाग और भारत का परिश्रम ही उनको चमकाने में सहयोग कर रहा है। विदेशी मानव भी तो मेरी आत्मा हैं भैया ! विश्वमानव का मंगल हो। इसलिए आज विश्व को बमों की जरूरत नहीं है, आतंक की जरूरत नहीं है, शोषकों की जरूरत नहीं है, विश्व को अगर जरूरत है तो भारतीय संस्कृति के योग की, ज्ञान की और **वसुधैव कुटुम्बकम्** के भाव की जरूरत है; विश्व में उपद्रव की नहीं, शांति की जरूरत है।

संगठन में शक्ति
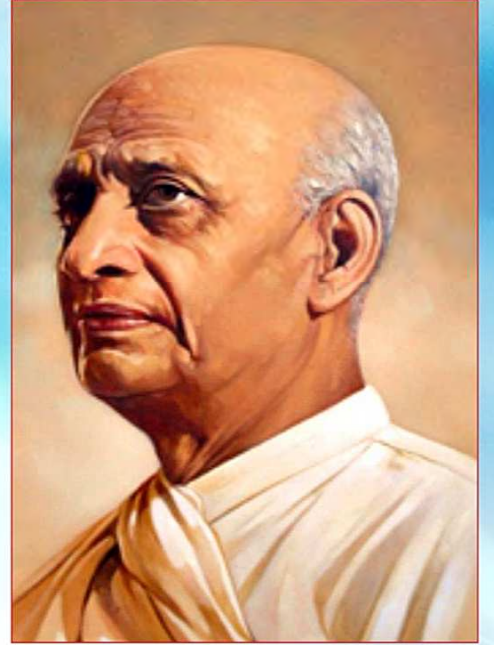
सरदार वल्लभभाई पटेल

गुजरात में बारडोली क्षेत्र के एक गाँव में चौपाल पर बैठे कुछ लोग घबराये स्वर में कुछ बातें कर रहे थे। एक युवक ने उनके इस प्रकार आतंकित होने का कारण पूछा। लोगों ने बताया : ''पूरा बारडोली क्षेत्र डाकुओं और पुलिस के अत्याचारों से पीड़ित है। शाम होते ही सभी घरों के दरवाजे बंद हो जाते हैं, गाँव में श्मशान जैसी खामोशी छा जाती है। केवल कुछ डाकू पचासों गाँवों के हजारों भोले-भाले लोगों को निर्दयतापूर्वक लूट रहे हैं।''

यह सुन उस युवक ने अपनी सूझबूझ, आत्मबल व साहस का परिचय देते हुए कहा : ''बुराइयाँ भी अच्छाइयों के आधार पर ही खड़ी होकर अपना पोषण प्राप्त करती हैं। डाकू कहाँ से शक्ति प्राप्त करते हैं ? इनकी ताकत का स्रोत है - संगठन, साहस, सावधानी और मनोबल। यदि इन गुणों को हम लोग भी विकसित करें तो आसानी से डाकुओं को पछाड़ा जा सकता है। सच्चाई और न्याय के लिए लड़नेवालों को परमात्मबल भी मददरूप होता है। हम अपना-अपना कर्तव्य निभायें, धैर्यपूर्वक डटे रहें, बुद्धि से काम लें और पूरी शक्ति से मुकाबला करें तो जीत हमारी ही होगी।''

उस युवक के अदम्य साहस ने मानो गाँववालों में एक नवीन चेतना, नवीन साहस व शक्ति का संचार कर दिया। उसके नेतृत्व में सब लोग संगठित हो गये। गाँव के हट्टे-कट्टे १५० नौजवानों को अस्त्र-शस्त्रों से लैस कर बुद्धि व धैर्यपूर्वक एक व्यूहरचना की गयी। जैसे ही डाकू आये, गाँववालों ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया और डटकर उनका मुकाबला किया। लोगों का संगठन, हिम्मत व साहस देखकर डाकू भाग गये और दुबारा फिर कभी आने की हिम्मत नहीं की।

लोगों में जान फूँकनेवाला वह निर्भीक युवक कोई और नहीं, सरदार वल्लभभाई पटेल थे, जिन्होंने देश को आजादी दिलाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। इस प्रकार का अदम्य साहस, धैर्य व सूझबूझ उनके पूरे जीवनकाल में देखने को मिलती है। इसलिए उन्हें 'लौह-पुरुष' कहा जाता है।

दुर्जनों की दुर्जनता तभी तक हावी रहती है जब तक सज्जन अपने बल-बुद्धि पर विश्वास रखकर संगठित नहीं होते। जिस प्रकार संगठन के प्रताप से पूरे गाँव की डाकुओं से रक्षा हो गयी, उसी प्रकार देश, धर्म, संत और संस्कृति की रक्षा का संकल्प लेकर सज्जन लोग संगठित हो जायें और अपनी-अपनी छोटी-मोटी योग्यता के द्वारा सेवायोग का आश्रय लें तो इस लक्ष्य को हासिल कर सब ओर मंगल-ही-मंगल होगा।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''कुप्रचार के समय ही सुप्रचार भी होता है तो कुप्रचार का इतना प्रभाव नहीं रहता। शिष्य अगर निष्क्रिय रहकर सोचते रह जायें कि 'करेगा सो भरेगा... भगवान उन्हें ठीक करेंगे...' तो कुप्रचार करनेवालों को खुला मैदान मिल जाता है। अतः आपस में संगठित हो जाओ ! जुल्म करना पाप है, जुल्म सहना दुगुना पाप है।''

मुखपृष्ठ २ का शेष

विश्व-सेवा जो कर रहे हैं बापूजी, निंदक कभी कर सकेंगे क्या ?

समस्या (२) : कुसंस्कार, व्यसन, अभद्रता आदि को बढ़ावा देनेवाले क्लब, बीयर बार, डांस बार, सिनेमा थिएटर आदि मानव-समाज को नैतिक पतन की खाई में धकेल रहे हैं।

समाधान : संत श्री आशारामजी आश्रम

विश्वशांति के प्रसारक, आध्यात्मिक स्पंदनों से ओतप्रोत ४२५ से भी अधिक आश्रम देश-विदेश में फैले हुए हैं। यहाँ सभी जाति-सम्प्रदाय के लोग आकर भक्तियोग, ज्ञानयोग, निष्काम कर्मयोग और कुंडलिनी योग के द्वारा हृदय में परमेश्वरीय शांति का प्रसाद पाकर आध्यात्मिक जगत के साथ-साथ लौकिक जगत में भी अद्‌भुत उन्नति करते हैं।

समस्या (३) : ईसाई मिशनरियों आदि द्वारा लोगों को धर्मांतरित कर देश को गुलाम बनाने का गहरा षड्यंत्र चलाया जा रहा है।

समस्या (४) : 'आदिवासी सबसे कमजोर वर्ग है। लगभग ५० प्रतिशत आदिवासी गरीबी रेखा के नीचे हैं।'

– इंडियन ह्यूमन डेवलपमेंट सर्वे

समाधान : धर्मांतरण पर प्रभावी ढंग से रोक तथा आदिवासी एवं पिछड़े लोगों का विकास

धर्मांतरित हुए असंख्य हिन्दुओं, आदिवासियों आदि को संस्कृति-रक्षक बापूजी ने पुनः अपने धर्म में लौटाया है। जिन लोगों को बहला-फुसलाकर धर्मांतरित किया गया था, उन्हें बापूजी ने सनातन धर्म की महिमा से अवगत कराया और उनकी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा किया है।

ऐसे गरीब इलाकों में जहाँ लोगों को सरकार की कोई विशेष मदद नहीं पहुँच पाती, वहाँ बापूजी स्वयं जाकर अपने हाथों से उन गरीबों को अनाज, कपड़े, बर्तन, जूते, छाता, कम्बल, माचिस तथा विद्यार्थियों को नोटबुकें, पेन व विद्यालय का गणवेश आदि आवश्यक सामग्रियों के साथ ही नकद दक्षिणा बाँटते रहे हैं और गृहस्थ में सुख-शांति की युक्तियों के साथ सत्संग का दान भी देते हैं। पूज्यश्री के मार्गदर्शन में चल रहे ४२५ से अधिक आश्रमों, १४०० से अधिक सेवा-समितियों एवं करोड़ों साधकों द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रों में ये सेवाकार्य

नियमित रूप से चलते रहते हैं। बापूजी ने गरीबों, आपदाग्रस्तों आदि को मकान बनवाकर दिये हैं। 'भजन करो, भोजन करो और रोजी पाओ' जैसे अभियानों से देशभर में बेरोजगार, असहाय वृद्ध, विकलांग आदि लाभान्वित हो रहे हैं। गरीबों, अनाश्रितों, विधवाओं, जरूरतमंदों के लिए आश्रम द्वारा हजारों राशनकार्ड वितरित किये गये हैं, जिनके माध्यम से कार्ड-धारकों को हर माह अनाज व जीवनोपयोगी वस्तुओं का निःशुल्क वितरण किया जाता है। इससे अनेक गरीब-आदिवासियों के व्यसन छूट गये, साथ ही उनका लौकिक व आध्यात्मिक विकास भी हुआ है।

''परम पूज्य बापूजी एवं उनके आश्रम द्वारा गरीबों और पिछड़े लोगों को ऊपर उठाने के कार्य चलाये जा रहे हैं, मुझे प्रसन्नता है। मानव-कल्याण के लिए, विशेषतः प्रेम व भाईचारे के संदेश के माध्यम से किये जा रहे विभिन्न आध्यात्मिक एवं मानवीय प्रयास समाज की उन्नति के लिए सराहनीय हैं।''

– डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम तत्कालीन राष्ट्रपति

समस्या (५) : मनोरंजन के नाम पर टीवी, सिनेमा, विडियो गेम, इंटरनेट आदि के पीछे प्रति सप्ताह बच्चे लगभग ५५ घंटे बिताते हैं। औसतन एक बच्चा १८ साल का होने तक टीवी पर २,००,००० हिंसक दृश्यों, ७२,००० से अधिक अश्लील दृश्यों को देख लेता है। सिनेमा, टीवी के कुप्रभाव से चोरी, दारू, धूम्रपान, हिंसा, बलात्कार, निर्लज्जता जैसे कुसंस्कारों का बच्चों पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है।

समाधान : विद्यार्थी उत्थान के विविध सेवाकार्य
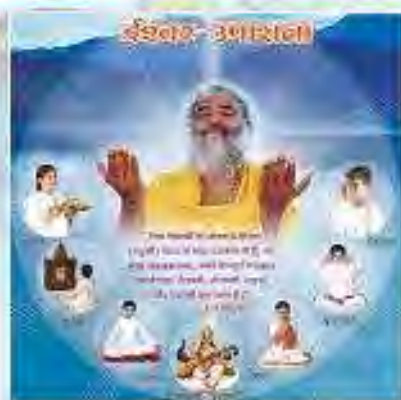
भावी पीढ़ी के विनाश की ओर बढ़ते कदमों को थामने के लिए बापूजी की प्रेरणा से देश-विदेश में चलाये जा रहे १७,००० से अधिक 'बाल संस्कार केन्द्रों', 'छात्र बाल संस्कार केन्द्रों' एवं 'कन्या बाल संस्कार केन्द्रों' द्वारा बच्चों में जप, प्राणायाम, योगासन, यौगिक प्रयोगों व प्रेरणादायी प्रसंगों के द्वारा नैतिक-आध्यात्मिक उन्नति करनेवाले जीवनमूल्यों व दिव्य संस्कारों का सिंचन हो रहा है। साथ ही विद्यालयों में 'योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रम' तथा आश्रमों में छुट्टियों में 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों' का आयोजन होता है। 'विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविरों' में पूज्य बापूजी स्वयं विशेष मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

समस्या (६) : अमेरिका में ७% बच्चे १३ वर्ष की उम्र के पहले ही यौन-संबंध बना लेते हैं। ८५% लड़के और ७७% लड़कियाँ १९ वर्ष के पहले ही यौन-संबंध बना लेते हैं। इससे जो समस्याएँ पैदा हुईं, उनको मिटाने के लिए वहाँ की सरकारों को करोड़ों डॉलर खर्च करने पर भी सफलता नहीं मिल रही है।

समाधान : युवाधन सुरक्षा अभियान

इस अभियान के अंतर्गत पूज्य बापूजी द्वारा संयम व ब्रह्मचर्य की महिमा उजागर करनेवाले 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' ग्रंथ का २ करोड़ से भी अधिक वितरण करवाया जा चुका है। इस ग्रंथ में युवाओं को संयमी व संस्कारी जीवन जीने की प्रेरणा के साथ-साथ तन-मन को स्वस्थ रखने की सरल युक्तियाँ सीखने को मिलती हैं। प्रतिवर्ष हजारों विद्यालयों व महाविद्यालयों में 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश ज्ञान प्रतियोगिता' का आयोजन होता है, जिसमें देश के लाखों विद्यार्थी भाग लेकर अपना सर्वांगीण विकास करते हैं।

'युवा सेवा संघ' और 'महिला उत्थान मंडल' द्वारा युवकों एवं युवतियों के उत्थान के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। 'युवाधन सुरक्षा अभियान' से युवाओं में नवचेतना आयी है।

समस्या (७) : 'वेलेंटाइन डे' का दुष्प्रभाव

'इन्नोसंटी रिपोर्ट कार्ड' के अनुसार २८ विकसित देशों में हर साल १३ से १९ वर्ष की १२,५०,००० कन्याएँ गर्भवती हो जाती हैं, जिसमें से ५,००,००० कन्याएँ गर्भपात करा लेती हैं और शेष कुँवारी माता बनकर नर्सिंग होम, सरकार व माँ-बाप के लिए बोझा बन जाती हैं अथवा वेश्यावृत्ति धारण कर लेती हैं।

समाधान : मातृ-पितृ पूजन दिवस

वेलेंटाइन डे की गंदगी हमारे देश में पैर न जमाये इसलिए लोकहितैषी बापूजी ने १४ फरवरी को 'मातृ-

पितृ पूजन दिवस' मनाने का आह्वान किया। पिछले ८ वर्षों से मनाये जा रहे इस पर्व से विश्व के १६७ देश लाभान्वित हो रहे हैं। इससे करोड़ों युवा पतन से बचे हैं एवं उनके जीवन में संयम, सदाचार के पुष्प खिले हैं।

समस्या (८) : २००८ के एक सर्वेक्षण के अनुसार '१५ वर्ष से कम उम्र के ५० लाख बच्चे गुटखे के आदी थे। उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में १६ प्रतिशत बच्चों में मुँह के कैंसर के लक्षण पाये गये।' **ग्लोबल एडल्ट टोबैको सर्वे** के अनुसार '५३.५ प्रतिशत भारतीय, तम्बाकू उत्पादों का उपयोग करते हैं।'

(देखें लिंक - http://en.wikipedia.org/wiki/Gutka)

समाधान : व्यसनमुक्ति अभियान

किसी भी व्यक्ति को व्यसनमुक्त करने के लिए पूज्य बापूजी का सत्संग रामबाण इलाज है। व्यसनमुक्ति अभियान (यात्राएँ, लघुफिल्म, प्रदर्शनी आदि) व बापूजी के सत्संग द्वारा करोड़ों व्यसनी लोग व्यसनमुक्त हुए हैं और आज स्वस्थ, सुखी व सम्मानित जीवन जी रहे हैं।

''बापूजी के सत्संग एवं उनकी प्रेरणा से चल रहे 'व्यसनमुक्ति अभियान' से करोड़ों लोगों के शराब, सिगरेट, गुटखा आदि व्यसन छूटते हैं।''

– श्री पी. दैवमुत्थु, सम्पादक 'हिन्दू वॉइस' मासिक पत्रिका

समस्या (९) : भारत में ५० प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित हैं। साथ ही शहरों में भी स्वास्थ्य समस्याएँ बढ़ रही हैं।

(देखें लिंक - http://goo.gl/CKpGwh)

समाधान : देश का स्वास्थ्य विकास

आश्रम द्वारा संचालित चल-चिकित्सालयों द्वारा आदिवासी व ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य-सेवाएँ उपलब्ध करायी जाती हैं। साथ ही अभावग्रस्त क्षेत्रों में 'निःशुल्क चिकित्सा शिविरों' का आयोजन भी होता है। विभिन्न आश्रमों में आयुर्वेदिक, होमियोपैथिक, एक्यूप्रेशर एवं प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों से निष्णात वैद्यों द्वारा उपचार किया जाता है। पूज्य बापूजी अपने सत्संगों में स्वस्थ रहने के सरल उपाय, योगासन, किस ऋतु में क्या खाना - क्या नहीं खाना आदि बताते रहते हैं, जिससे हम बिना खर्च के बीमारियों को मार भगायें और भविष्य में बीमार ही न हों। साथ ही मासिक पत्रिका 'ऋषि प्रसाद' व मासिक समाचार पत्र 'लोक कल्याण सेतु' के माध्यम से हर महीने लाखों-करोड़ों लोगों को घर बैठे स्वास्थ्य का संदेश पहुँच जाता है। पूज्यश्री का उद्देश्य है -

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

'सभी सुखी हों, सभी निरोग रहें।'

समस्या (१०) : भारत में वैध रूप से लगभग ३६०० व अवैध रूप से लगभग ३०,००० से अधिक कत्लखाने चल रहे हैं, जिससे धीरे-धीरे गौधन समाप्त होता जा रहा है।

(देखें लिंक - http://en.wikipedia.org/wiki/Cattle_slaughter_in_India)

समाधान : गौ-संरक्षण

संत श्री आशारामजी गौशालाओं में कत्लखाने ले जाने से रोकी गयीं हजारों गायों की सेवा की जा रही है। इनमें से कई गायें तो दूध भी नहीं देती फिर भी उन गायों का प्रेम से पालन किया जाता है। इनके झरण, गोबर आदि से धूपबत्ती, खाद, फिनायल, औषधियों आदि वस्तुओं के निर्माण द्वारा गायों की महत्ता के प्रति समाज को जागरूक किया जाता है ताकि व्यापक रूप से गौ-सुरक्षा हो सके।

समस्या (११) : रॉक म्युजिक बजानेवाले और सुननेवाले की जीवनशक्ति क्षीण होती है। डॉ. डायमंड ने प्रयोगों से सिद्ध किया कि 'हाथ का डेल्टोइड स्नायु सामान्यतया ४० से ४५ कि.ग्रा. वजन उठा सकता है। जब रॉक म्युजिक बजता है तब उसकी क्षमता केवल १० से १५ कि.ग्रा. वजन उठाने की रह जाती है।' इनका प्रचलन बढ़ रहा है।

समाधान : भगवन्नाम संकीर्तन अभियान

समाज में वैचारिक प्रदूषण मिटाने तथा सांस्कृतिक चेतना जगाने के उद्देश्य से आश्रमों व साधकों द्वारा समय-समय पर देश-विदेश के विभिन्न स्थानों पर भगवन्नाम संकीर्तन यात्राएँ एवं प्रभातफेरियाँ निकाली जाती हैं। इससे तन-मन व वातावरण पवित्र होता है और जीवनशक्ति का खूब विकास होता है।

समस्या (१२) : हर वर्ष गर्मियों में देश के विभिन्न इलाकों में पानी की किल्लत होती है। लोगों व राहगीरों को पीने के लिए पानी बड़ी मुश्किल से मिलता है। कई जगह अकाल की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

समाधान : शरबत, छाछ, जल प्याऊ सेवा अभियान

पूज्य बापूजी के अवतरण दिवस से पूरी गर्मियों में बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन इत्यादि विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर चलनेवाली निःशुल्क शीतल पलाश शरबत, छाछ व जल प्याउओं के सेवा-अभियान का शुभारम्भ होता है। भीषण गर्मी में पानी की समस्या होने पर बापूजी के शिष्य दूर-दराज से भी पानी की व्यवस्था करके पथिकों को शीतल शरबत व पानी पिलाते आये हैं। अभी तक करोड़ों लीटर शरबत, छाछ आदि का निःशुल्क वितरण किया जा चुका है।

समस्या (१३) : पिछले १० वर्षों में भारत में ८ लाख अजन्मी लड़कियों को गर्भपात करा के मारा गया है। महिलाओं में शराब, धूम्रपान आदि व्यसनों का चलन बढ़ रहा है। दुनिया में लगभग २५ करोड़ महिलाएँ रोजाना धूम्रपान कर रही हैं।

(देखें लिंक - http://goo.gl/p4OoAi)

समाधान : युवतियों व महिला वर्ग का उत्थान

पूज्य बापूजी की प्रेरणा से चल रहे **'महिला उत्थान मंडल'** नारीशक्ति को जागृत करने व आत्मसम्मान दिलाने में सतत सेवारत हैं।

इनके द्वारा युवतियों के सर्वांगीण विकास हेतु 'युवती संस्कार सभाएँ' व 'तेजस्विनी अभियान शिविर' तथा महिलाओं हेतु 'महिला प्रतिभा विकास सभाएँ', 'गर्भपात रोको अभियान', 'दिव्य शिशु संस्कार' आदि अभियान चलाये जा रहे हैं। इससे महिलाओं में गर्भपात, धूम्रपान, तलाक, आत्महत्या जैसी समस्याएँ सहज ही दूर हो रही हैं।

कॉल सेंटरों में महिलाओं के चरित्रहनन की खबरें आयीं तब बापूजी ने जाहिर सत्संग में इसके विरुद्ध आवाज बुलंद की थी और बापूजी की प्रेरणा से 'महिला उत्थान मंडल' ने सशक्त रूप से इसका विरोध किया था।

ऐसे सच्चरित्रता, संयम, सदाचार के प्रचारक, सुदृढ़ समर्थक एवं सुंदर समाज के निर्माण में सक्रिय रूप से अतुलनीय योगदान देनेवाले महापुरुष पूज्य बापूजी पर लगाये गये आरोप अनर्गल, थोथे, बोगस एवं मनगढ़ंत हैं। आरोप लगानेवाले क्या बापूजी की तरह समाज के करोड़ों लोगों के जीवन में इतने सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं ? संयम, सदाचार, सद्भाव, भाईचारा, देशप्रेम, प्राणिमात्र की भलाई में इतने विशाल जन-समुदाय को लगा सकते हैं ? जो भलाई की बापूजी ने, वह निंदक कर सकेंगे क्या ? तो फिर लोगों की श्रद्धा तोड़कर उन्हें सत्पथ से भटकाने का देशद्रोह क्यों ? प्राणिमात्र के मंगल के कार्यों में बाधा पैदा करने का दुष्प्रयास क्यों ?

***

अहंकार पर विजय अहंकार नहीं पाता है, अहंकार-अहंकार टकरायेगा लेकिन अहंकार पर विजय नम्रता पा लेती है। विकार पर विजय विकार नहीं पायेगा, विकार पर विजय निर्विकारिता पायेगी। प्रकृति पर विजय प्रकृति क्या पायेगी ! प्रकृति पर विजय पानी है तो परमात्मा की शरण आ जाओ।

सब ओर अमृत ब्रह्म ही है

– स्वामी श्री अखंडानंदजी सरस्वत

भावना करें कि सब ओर ब्रह्म-समुद्र लहरें मार रहा है । नहीं, श्रुति भावना करने के लिए साधन नहीं बता रही है । सर्प में रज्जु की भावना करने से सर्प शिथिल भले ही हो जाय किंतु रज्जु का साक्षात् नहीं हो सकता । रज्जु तो सिद्ध वस्तु है, सामने विद्यमान ही है किंतु उसमें जो सर्प-दृष्टि हो गयी है उसे निवृत्त करना है । यह सर्प-दृष्टि कैसे हुई ? अविद्या से । उसी अविद्या की निवृत्ति अपेक्षित है । अविद्या निवृत्ति के पश्चात् अथवा तत्सम-काल ही रज्जु रज्जु ही दिखेगी, सर्पादि के समस्त विकल्प ध्वंस हो जायेंगे । इसी प्रकार ब्रह्म सिद्ध वस्तु है । उसे जिस अविद्या के कारण अनेक-विध जान-मान रहे हैं, उस अविद्या को ही निवृत्त करना है । अविद्या निवृत्त होने पर सब ओर अमृत ब्रह्म ही है ।

लड़की के शरीर पर नहीं थे कोई चोट के निशान : चिकित्सक

दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका । २२ मार्च को जोधपुर सत्र न्यायालय में संत आशारामजी बापू पर आरोप लगानेवाली लड़की का मेडिकल करनेवाली दिल्ली के लोकनायक अस्पताल की गायनेकोलॉजिस्ट डॉ. शैलजा वर्मा के बयान दर्ज हुए । बयान में उन्होंने कहा कि ''मेडिकल के दौरान लड़की के शरीर पर कोई चोट के निशान नहीं थे और न ही प्रतिरोध के कोई निशान थे । लड़की का हाईमन इनटैक्ट (ज्यों-का-त्यों) पाया गया था ।''

(डॉ. शैलजा के बयान से स्पष्ट है कि एफआईआर में लिखवाये गये अनर्गल आरोप मनगढ़ंत हैं । लड़की के साथ वैसा कुछ हुआ ही नहीं था । एक सुनियोजित षड्यंत्र के तहत पूज्य बापूजी को फँसाया गया है ।)
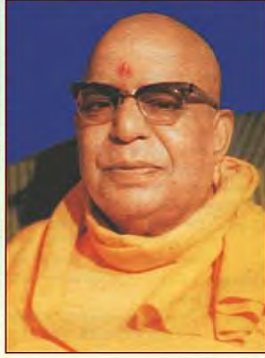
पूज्य बापूजी एक महापुरुष हैं

– संत श्री चाँडूरामजी साहिब अखिल भारतीय अध्यक्ष श्री कँवरराम ट्रस्ट तथा पीठाधीश संत श्री असुधा राम आश्रम, लखनऊ

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू एक पहुँचे हुए सिद्ध संत हैं । मीडिया के प्रभाव में आकर जो लोग उनको गलत बोल रहे हैं, उनको तो पाप लगेगा ही पर जिनके मन में भी उनके लिए गलत विचार आ रहे हैं उनको भी बहुत पाप लगेगा । संत उस उपजाऊ भूमि की तरह हैं, जिसमें जो जैसा बीज बोयेगा, उसको वह अनंत गुना होकर मिलेगा । निंदकों की तो दुर्गति होती है ।

पूज्य बापूजी एक महापुरुष हैं । 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' पूज्य बापूजी का एक बहुत बड़ा आशीर्वाद है, जो मानवमात्र में अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम और गौरव उत्पन्न करेगा ।

पुण्यदायी तिथियाँ

२५ अप्रैल : वरूथिनी एकादशी (दस हजार वर्षों की तपस्या का फल देनेवाला व्रत)

२८ अप्रैल : सोमवती अमावस्या (दोपहर १२-४१ से २९ अप्रैल सूर्योदय तक)

२ मई : अक्षय तृतीया (वर्ष के साढ़े तीन शुभ मुहूर्तों में से एक । यह तिथि सर्व कार्य सिद्ध करनेवाली है । इस दिन कार्यारम्भ हेतु शुभ मुहूर्त नहीं देखना पड़ता ।), त्रेता युगादि तिथि (प्रातः पुण्यस्नान, अन्न-जल दान, जप, तप, हवन आदि शुभ कर्मों का अक्षय फल)

७ मई : बुधवारी अष्टमी (सूर्योदय से रात्रि ९-५६)

१० मई : मोहिनी एकादशी (सब पापों का क्षय व सब प्रकार के दुःखों का निवारण करनेवाला व्रत)

१४ मई : बुद्ध पूर्णिमा, वैशाख स्नान समाप्त

१५ मई : विष्णुपदी संक्रांति (पुण्यकाल : सूर्योदय से दोपहर १२-३५ तक) (जप-ध्यान व पुण्यकर्म का फल लाख गुना-पद्म पुराण), देवर्षि नारद जयंती

सद्गुणों की सीख व सेवा-निष्ठा की प्रेरणा देनेवाला पर्व

- पूज्य बापूजी

(श्री हनुमान जयंती : १४ व १५ अप्रैल)

हनुमानजी त्याग में अद्वितीय और पूरे कर्मठ हैं। मंजीरे लेकर कीर्तन करने में उन्हें संकोच नहीं और तत्त्वज्ञान में, ज्ञानियों में भी अग्रगण्य हैं।

'मैं' तीन प्रकार का होता है। 'मैं शरीर हूँ, मेरे पास धन है, दौलत है...' यह नकली 'मैं' आधिभौतिक है। फिर 'मैं भगत हूँ, तपस्वी हूँ, अष्टसिद्धि, नवनिधिवाला हूँ...' यह आधिदैविक 'मैं' है। हनुमानजी ने इन दोनों 'मैं' को ठुकराकर रामजी की शरण ली थी और असली विजय पाने में सफल हुए।

राम लक्ष्मण जानकी। जय बोलो हनुमान की ।।

साधु-संतों के रखवाले

चित्रकूट में एक महात्मा कंद-मूल खाते, जप करते, संयम से रहते, होंठों से 'राम-राम' जपते; फिर कंठ से, फिर हृदय से रामनाम निकलने लगता।

जो रामजी को मानते हैं वे हनुमानजी को भी मानते हैं। महात्मा के आगे हनुमानजी प्रकट हो गये और बोले : ''संतों की सेवा करते हो ?''

बोले : ''मैं तो अकिंचन हूँ, मेरे पास तो कुछ है नहीं।''

''सब हो जायेगा। लो यह मणि।''

''इस मणि का क्या करूँ हनुमानजी ? मुझे तो बस, आपका स्नेह, आपकी प्रीति मिलना पर्याप्त है।''

''जब तक संतों की सेवा होती रहेगी, तब तक इस मणि के प्रभाव से कुछ कम नहीं पड़ेगा। अयोध्या में सरयू नदी के किनारे जाकर संतों की सेवा करो। भजनानंदी संतों को भिक्षा माँगने के लिए तकलीफ होती है; कोई भी संत आये और पाये ऐसी व्यवस्था करना।''

और महाराज, ऐसे भंडारे चले... और संत ऐसे 'जय-जय सियाराम... !' करके पायें कि आहा... ! उन संत का नाम ही मणिरामदास पड़ गया। आज भी अयोध्या में मणिरामदास की छावनी, मणिरामदास की परम्परा चल रही है।

हनुमानजी केवल लालजी महाराज के यहाँ अथवा चित्रकूट में भजन करनेवाले संत के पास ही प्रकट हुए ऐसा नहीं, और भी कई साधु-संतों के जीवन में हनुमानजी के विषय में मेरे को सुनने को मिला है।

राम-सेवा में तत्पर

हनुमानजी में त्याग इतना अद्भुत था कि जब वे लंका को जा रहे थे तो सुवर्ण का मैनाक पर्वत समुद्र से उभरा और बोला : ''मुझे सगरवंशियों का बड़ा सहयोग मिला है और आप सगरवंश के श्रीरामचन्द्रजी की सेवा में जा रहे हो, अतः तनिक आराम करो, मैं उऋण हो जाऊँगा; सगरवंश की सेवा मैंने खूब ली है।''

हनुमानजी के पास अविकम्पयोग था। मान मिलता है, मैनाक पर्वत निकल आता है तो हनुमानजी उसे प्रणाम करते हैं और छूकर कहते हैं कि ''बस, रामकाज के बिना क्या विश्राम ! आपकी सेवा मैंने स्वीकार कर ली। आपकी बड़ी कृपा है, बड़ी उदारता है।'' तो हनुमानजी में नम्रता का भी गुण है और त्याग भी पूरा है और सेवा में भी पूरे तत्पर हैं। क्यों ? क्योंकि हनुमानजी का उद्देश्य था पूरे तत्त्व को पाना।

तो हनुमानजी के जीवन में सुवर्ण के मैनाक पर्वत का लोभ नहीं, संग्रह नहीं और त्याग का अहंकार नहीं। जो सुवर्ण के पर्वत को त्याग सकता है वही सोने की लंका से सकुशल बाहर भी आ सकता है।

दैवी गुणों की खान : श्री हनुमानजी

श्रीरामचन्द्रजी अगस्त्यजी से हनुमानजी के गुणों का वर्णन करते हैं। भगवान भी जिसके गुणों का वर्णन करें वह है हनुमानजी का महत्त्वपूर्ण जीवन ! हनुमानजी की शूरवीरता की प्रशंसा करते रामजी अघाते नहीं। और दक्षता - किसीके पक्षपात में न बह जाना ऐसी बुद्धि की दक्षता हनुमानजी की है। यह हनुमान जयंती का पर्व आपको भी उत्साहित करता है कि आपकी बुद्धि की दक्षता बढ़े और आपमें मानसिक व शारीरिक शूरवीरता रहे।

रामजी हनुमानजी के बल की प्रशंसा करते हैं। उनमें इन्द्रियबल, मनोबल और ब्रह्मचर्य-बल भी है। श्रीरामजी अगस्त्य ऋषि के आगे हनुमानजी की विद्वत्ता व धैर्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। लेकिन हनुमानजी केवल विद्वान ही नहीं, नीतिज्ञान में भी निपुण हैं और पराक्रमी व प्रभावसम्पन्न हैं। तो आपके जीवन में हनुमानजी के ये दिव्य गुण - प्रभावसम्पन्नता, पराक्रम, ज्ञान, नीति, विद्वत्ता आदि आयें। प्रमाणपत्र न भी हो तब भी सत्संग के द्वारा विद्वत्ता हासिल हो जाती है। धैर्य, बल, दक्षता, शूरवीरता, सात्त्विक गुणनिधानता - ये सद्गुण हनुमानजी में हैं और हम भी हनुमानजी की परम्परा के हैं, रामभक्त परम्परा के हैं। हमारे में भी इन दिव्य गुणों का वास हो अथवा इन दिव्य गुणों की तरफ हम भी दृष्टि रखें तो विकसित हो सकते हैं।

हनुमान जयंती पर हनुमानजी की उपासना व स्मृति बुद्धि, बल, कीर्ति और धीरता देनेवाली है। निर्भीकता, आरोग्य, सुदृढ़ता और वाक्पटुता चाहनेवाले लोग भी हनुमान जयंती के दिन हनुमानजी की गुणगाथा सुनकर अपने में वे गुण धारण करने का मन बना लेंगे तो उनका संकल्प भी देर-सवेर फल दे सकता है।

दूर करें घर के कलह-क्लेश

जिसको घर में कलह, क्लेश मिटाना हो, रोग या शारीरिक दुर्बलता मिटानी हो, वह इस चौपाई की पुनरावृत्ति किया करे :

बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं,
हरहु कलेस बिकार ॥

चिरंजीवी हैं हनुमानजी

हनुमानजी ७ चिरंजीवियों में से एक हैं । अश्वत्थामा, राजा बलि, व्यास मुनि, हनुमानजी, विभीषण, कृपाचार्य, परशुरामजी ये सप्तचिरंजीवी हैं । और हनुमानजी मिलते भी हैं, मार्गदर्शन भी कर देते हैं, इसके कई प्रमाण भी आये हैं । मेरे मित्रसंत लालजी महाराज से मिलने आये थे और उनको अपनी योगशक्ति से उड़ा के लेकर गये । ऐसा नहीं कि सपने में या कपोल-कल्पना या झूठ, बिल्कुल पक्की, सच्ची बात है ! और कभी भी, कहीं भी हनुमानजी किसी भी रूप में किसीसे भी मिल सकते हैं, आदेश भी देते हैं।

हनुमानजी की शीघ्र प्रसन्नता कैसे पायें ?

हनुमानजी शीघ्र प्रसन्न हों इसके लिए आप हनुमानजी की बाहर की आकृति की वांछा (इच्छा) छोड़कर हनुमानजी जिस अंतर्यामी राम में शांत होते थे, विश्रांति पाते थे, उसमें विश्रांति पाओ तो हनुमानजी प्रसन्न मिलेंगे । सूर्य को, देवी-देवताओं को या माता-पिता को प्रसन्न करना हो अथवा आपको देखकर लोग प्रसन्न हो जायें ऐसा आप चाहते हों तो भी यही कुंजी है, गुरुचाबी है जो सारे ताले खोल देती है । आप अपने आत्मदेव में विश्रांति पाने की कला सीख लो । रात को सोते समय अपने आत्मा में विश्रांति पाओ और सुबह उठते समय अपने आत्मदेव में और बाहर व्यवहार करते-कराते भी

उठत बैठत ओई उटाने,
कहत कबीर हम उसी ठिकाने ।

दृष्टि उधर बनी रहे, सूझबूझ उधर बनी रहे, महत्त्व उसका बना रहे । श्रीरामजी, श्रीकृष्णजी के जीवन में भी ऐसा ही था, मेरे गुरुदेव के व्यवहार और लोक-मांगल्य, लोक-संग्रह के व्यवहार में भी उद्देश्य वही था।

***

संत श्री आशारामजी बापू पर आरोप लगानेवाली लड़की निकली बालिग

शाहजहाँपुर (उ.प्र.) के श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ से संत श्री आशारामजी बापू पर आरोप लगानेवाली लड़की के बालिग होने का प्रमाण प्राप्त हुआ है । विद्यापीठ के प्राचार्य ने ६ फरवरी को पुलिस को दिये पत्र में लड़की की जन्मतिथि ६ अगस्त १९९५ है । इसके अनुसार तथाकथित आरोप के अंतर्गत कहे गये दिन लड़की बालिग थी । जोधपुर पुलिस ने शाहजहाँपुर पहुँचकर प्रमाणपत्रों की जाँच की, जिसके अनुसार लड़की की उम्र ज्यादा निकली।

('दैनिक जागरण' व 'हिन्दुस्तान' समाचार पत्रों के आधार पर)

वरिष्ठ न्यायविद् श्री राम जेठमलानी एवं सुब्रमण्यम स्वामी ने तो पहले ही कहा है कि केस झूठा है, बोगस है।

***

परस्पर संयमी जीवन

(पूज्य बापूजी के मित्रसंत श्री लालजी महाराज द्वारा बताया गया अनोखा प्रसंग)

एकांत-साधना हेतु पूज्य बापूजी का कभी हरिद्वार, नारेश्वर (गुज.), माउंट आबू (राज.) तो कभी मोटी कोरल (गुज.) जाना होता रहता था।

एक बार बापूजी मोटी कोरल में रुके हुए थे तो वहाँ उनकी माँ व धर्मपत्नी आ पहुँचीं। उस समय का एक प्रसंग है। प्रतिदिन शाम को ५ बजे मैं (लालजी महाराज) और आशारामजी नर्मदा किनारे जाते थे। नर्मदा में स्नान करके आशारामजी नदी के तट पर प्रवाह के पास ही बैठकर ध्यान करते थे।

एक बार लक्ष्मीदेवी (पूज्य बापूजी की धर्मपत्नी) निवास पर ही चबूतरे पर बैठकर कोई ग्रंथ पढ़ रही थीं। मैंने सोचा कि शायद मेरी उपस्थिति के कारण ये लोग एक-दूसरे से बात नहीं करते; इन्हें बातचीत का मौका देना चाहिए। इसलिए मैंने युक्ति की। एक दिन मैं आशारामजी के साथ नर्मदा-स्नान हेतु नहीं जा सका, बाद में गया। वहाँ आशारामजी एक फर्लांग (२२० गज) दूर ध्यान में बैठे हुए दिखे। आशारामजी की माँ के साथ आयी हुई उनकी धर्मपत्नी लक्ष्मीदेवी को मैंने इशारे से कहा कि 'आप भी वहाँ जाइये।' मगर मैंने देखा कि लक्ष्मीदेवी उस ओर गयीं तो सही परंतु आशारामजी से भी आगे बहुत दूर चली गयीं। वे आशारामजी के नजदीक भी नहीं गयीं और फिर बाद में अपनी कुटीर में वापस चली गयीं।

रात को जब आशारामजी मिलने आये तब मैंने उनसे पूछा : "आपके पास शाम को कोई आया था क्या ?"

उन्होंने कहा : "नहीं, मैं तो ध्यान में बैठा था।"

बाद में जब लक्ष्मीदेवी से बापूजी के पास न जाने व बातचीत न करने का कारण पूछा गया, तब उन्होंने बहुत ही सुंदर जवाब दिया : "इनके (बापूजी के) ध्यान-भजन में विघ्न डालना तो पाप ही है न ! मुझे तो सेवा करनी है। इनके अवलम्बन से अपनी साधना सिद्ध करना यही मेरा धर्म है।"

मुझे हुआ कि कैसे सुंदर विचार हैं ! उनके चित्त में मिलना, बात करना अथवा साथ में बैठना - ऐसे कोई भी संस्कार नहीं थे इसलिए वे तो दूर से निकलकर सीधी चली गयीं। इससे स्पष्ट होता है कि लक्ष्मीदेवी वैराग्य की मूर्ति हैं, साधना में सहयोग देनेवाली पतिव्रता नारी हैं।

बाद में एक बार अकेले में आशारामजी ने मुझसे कहा था : "मेरी यह जो आत्मनिष्ठा व इन्द्रिय-विजय का भाव साधना में उच्च गति पा रहा है, इसका श्रेय मेरी धर्मपत्नी को भी जाता है।"

दोनों का परस्पर का कैसा अनोखा संयमी जीवन है ! हमारे लिए तो दोनों ही परम वंदनीय हैं।

(इतना कहकर लालजी महाराज ने अहोभाव में भरकर आँखें बंद कर लीं।)

अपने ईश्वरत्व को जगायें

- पूज्य बापूजी

अर्जुन को भगवान ने कहा :

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः ।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन ॥

'हे अर्जुन ! मेरे जन्म और कर्म दिव्य हैं - इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्व से जान लेता है, वह शरीर को त्यागकर फिर जन्म को प्राप्त नहीं होता, किंतु मुझे ही प्राप्त होता है।' **(गीता : ४.९)**

ऐसा व्यक्ति भगवान की दिव्यता को पा लेगा। उसके जन्म में दिव्यता और कर्मों में भी दिव्यता आ जायेगी।

बापूजी ! दिव्यता किसे बोलते हैं ?

जो साधारण जन्म-मरण और राग-द्वेष, काम-क्रोध में बहे जा रहे हैं, वे साधारण हैं और जो इनसे निर्लेप है वह परात्पर आत्मा है। इन दोनों के बीच की जो अवस्था है वह दिव्य अवस्था है, उसे विलक्षण अवस्था कहते हैं। जिसमें परब्रह्म-परमात्मा के (निर्गुण, निराकार आदि) लक्षण भी पूर्ण नहीं दिखते और जगत के तुच्छ लक्षण भी नहीं दिखते, जो बीच में है, उसे कहते हैं विलक्षण और दिव्य। खाना-पीना और दुःख आये तो दुःखी हो जाना, सुख आये तो चिपक जाना और फिर परेशान होते-होते संस्कारों के अनुसार जन्म-मरण की खाई में जा गिरना - यह साधारण मनुष्य का, संसारी का स्वभाव होता है।

मनुष्य-शरीर तीन बातों के मिश्रण की खबर देता है : जड़ता, पशुता और ईश्वरत्व। जीभ कहती है कि 'हलवाई की दुकान पर, चाट की दुकान पर चलो', आँखें कहती हैं : 'फिल्म दिखाओ', कान कहते हैं : 'संगीत

सुनाओ', शरीर कहता है : 'अब थके हैं, जरा लेट जाओ, जड़ता में आ जाओ' लेकिन आपका अंतरात्मा कहता है कि 'अंतर का सुख और ईश्वर क्या है ? सृष्टि क्या है ? महापुरुष क्या हैं ?' इस प्रकार की जिज्ञासा भी तुममें विद्यमान है, यह ईश्वर का दिव्य स्वभाव तुम्हारे अंदर छुपा है । तो आप ईश्वर के दिव्य स्वभाव को जानने के लिए अपने कर्मों में दिव्यता लायें । साधारण व्यक्ति फल की वासना से कर्म करता है लेकिन आप अपने कर्मों में दिव्यता लायें । फल की इच्छा नहीं, ममता नहीं, आसक्ति और कर्तृत्व-अभिमान नहीं... तो कर्मों में दिव्यता आयेगी । योग से आपके जीवन में दिव्यता आयेगी और ज्ञान आपके अंदर दिव्यता का चम-चम प्रकाश चमका देगा ।

जन्म-कर्म दिव्य बनाने की युक्ति

आपके अंदर जो ईश्वर-तत्त्व है उसको आप नहीं जानते हैं । पाशवी वासनाओं को सहमति देते हैं, जड़ शरीर को 'मैं' मानते हैं और जड़ शरीर के साथ संबंधित वस्तुओं और व्यक्तियों को 'मेरा' मानते हैं तो आपके कर्म और आपका जीवन साधारण हो जाता है । लेकिन श्रीकृष्ण अपने चैतन्य वपु (चैतन्य शरीर) को 'मैं' मानते हैं और अपने व्यापक वपु को, सारे ब्रह्मांड को 'मेरा' मानते हैं । ऐसे ही आप श्रीकृष्ण और कृष्ण-तत्त्व को जाने हुए महापुरुष के जन्म और कर्म का अनुसंधान करके अपने जन्म और कर्म को दिव्य बनाकर मुक्तात्मा हो जाइये ।
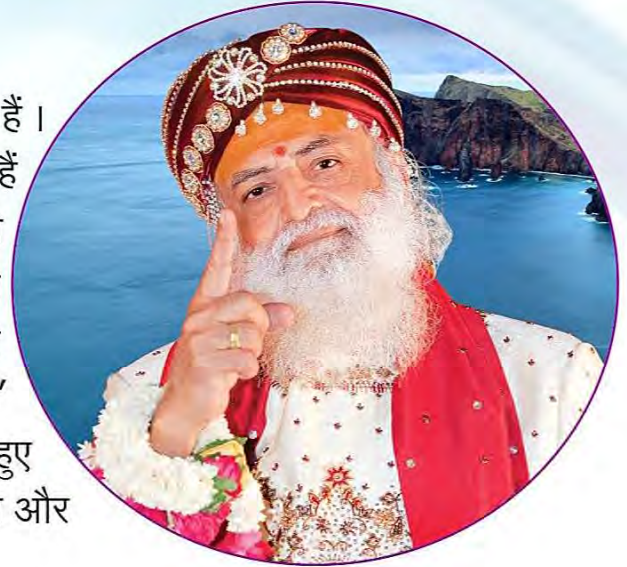
आपके जड़ शरीर की 'मैं' हटेगी, पाशवी वासनाओं के साथ तादात्म्य हटेगा तो जन्म और कर्म में आपकी अपनी दिव्यता का स्वभाव छलकेगा ।

आप अभी हैं तो आप कहीं-न-कहीं कल थे । आप माँ की गोद में थे तभी आप यहाँ हो । माँ की गोद के पहले आप माँ के गर्भ में थे तभी माँ की गोद में आये हो और माँ के गर्भ में आने के पहले आप कहीं थे और जहाँ थे उसके पहले कहीं थे । उसके पहले, उसके पहले, उसके पहले... चलते जाओ तो सनातन सत्य, जो सृष्टि के पहले था, तब आप थे और मरने के बाद कहीं-न-कहीं रहोगे, रहोगे, रहोगे । उसके बाद, उसके बाद... कहीं-न-कहीं अंत में आप रहोगे । तो आपका ईश्वरीय तत्त्व सनातन सत्य है, दिव्य है और आपका शरीर जड़ है, वासनाएँ पाशवी हैं ।

आत्मा की दिव्यता, वासना की पाशविकता और शरीर की जड़ता - इन तीनों के मेल से जीव बेचारा साधारण जन्म-मरण के चक्कर में चला आता है । लेकिन मनुष्य-देह में दाता उसको ऐसी बुद्धि देता है कि सत्संग का आश्रय करके वह अपना ईश्वरीय स्वभाव, ईश्वरीय सुख, ईश्वरीय आनंद जागृत कर सके । और जब शरीर मरने को हो तो याद रखे कि 'जो मर रहा है, वह शरीर है ।' जब बीमारी आये तो याद रखे कि 'बीमार हुआ है शरीर । मेरे पैर में दर्द है, पेट या पीठ में दर्द है, सिर में दर्द है... मैं इससे न्यारा हूँ । **मन में चिंता है, इससे 'मैं' न्यारा हूँ । शरीर में पीड़ा है, इससे मैं न्यारा हूँ । मन में वासना है, इससे मैं न्यारा हूँ...' तो वासना और पीड़ा आपको दबायेगी नहीं लेकिन आपकी दिव्यता आपके कर्मों व जन्मों में चमकेगी और आपका मोक्ष आपके हाथ का खेल हो जायेगा ।**

बोलने को भी जो देखता है और न बोलने को भी देखता है, सुख को भी जो देखता है, दुःख को भी देखता है,

तंदुरुस्ती को भी देखता है और बीमारी को भी जो देखता है उसको तू देख, इसीका नाम है **'ईश्वरत्व'**। तेरे ईश्वरत्व को तू जागृत कर तो तेरे जन्म और कर्म दिव्य हो जायेंगे भैया !

महापुरुष भगवान के जन्म और कर्म की दिव्यता जानते हैं और महापुरुषों के द्वारा साधक और सत्संगी लोग जानते हैं तो उनका भी जन्म और कर्म दिव्य होने लगता है। जो पहले दुःख की चोट लगती थी, सत्संग के बाद वह चोट नहीं लगती है। पहले जो सुख का अहंकार आता था वह अब नहीं आता। जिनके कर्म सत्संग के द्वारा दिव्य हो जाते हैं, उनका जीवन साधारण व्यक्तियों जैसा दिखते हुए भी अंदर से वे असाधारण आत्मिक शांति से सम्पन्न होते हैं।

जो बुराई आपके हौसले को दबाये रखती है, जो बुराई आपके व्यक्तित्व को निखरने नहीं देती है, जो बुराई चाहती है कि सब लोग आपकी वाहवाही करें और सराहना हो जाय उस बुराई से थोड़ी देर के लिए तो हर्ष मिलेगा लेकिन आपका हृदय टोकेगा, रोकेगा। आप कभी कोई कर्म करते हो और सभी लोग उसकी प्रशंसा नहीं करते, निंदा करते हैं लेकिन आपने अच्छाई से सम्पन्न होकर कर्म किया है तो चाहे रावण के आगे जाने में अंगद को अहंकार दिखाने का कर्म करना पड़ा और हनुमानजी को लंका जलाने का कर्म करना पड़ा फिर भी हनुमानजी की अंतरात्मा में क्षोभ नहीं होता, अंगद की अंतरात्मा में अहंकार नहीं होता, उनके कर्म दिव्य माने जायेंगे क्योंकि फल की इच्छा नहीं है, कर्ताबुद्धि नहीं है और अंदर में कर्ता तुच्छ नहीं है। कर्ता को दिव्य बनाओ तो आपके कर्म दिव्य होंगे। कर्ता को दिव्य बनाओ तो आपका यही जन्म दिव्य हो जायेगा।

तो भगवान के कर्मों का उद्देश्य है - वासनाएँ, मूर्खता, आसक्ति मिटाना, बुद्धि, विवेक जगाना, सद्भाव जगाना, सत्-सुख की तरफ यात्रा में लोगों की रुचि उत्पन्न करना, अधर्म को मिटाना, समाधि, ध्यान और आराधना के मार्ग सरल बनाना। भगवान और भगवत्प्राप्त महापुरुषों के जन्म का और कर्मों का यह हेतु होता है। आपके जन्म और कर्म का भी ऐसा ही हेतु हो जाय ऐसा संत और भगवान चाहते हैं।

'मातृ-पितृ पूजन दिवस' कामैं समर्थन व प्रशंसा करता हूँ

- श्री कैलाश विजयवर्गीय, नगरीय एवं आवास मंत्री, म.प्र.

हमारे देश की युवा पीढ़ी पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होकर वेलेंटाइन डे जैसा विदेशी त्यौहार मनाती है, यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। वास्तव में हमारे देश में इसके लिए कोई स्थान नहीं है क्योंकि हमारा देश संस्कार, संस्कृति और पवित्र उत्सवों का देश है।

समाज को मजबूत करने का काम संतों की प्रेरणा से ही सम्भव है और परम पूज्यपाद संत आशारामजी महाराज ने जो वेलेंटाइन डे को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' उत्सव के रूप में मनवाया है, मैं इसका समर्थन और प्रशंसा करता हूँ कि यह एक बहुत अच्छे तरीके से उन्होंने परिवार में एक आंदोलन स्थापित किया है। मेरी ओर से भी यही संदेश है कि हर वर्ष वेलेंटाइन डे की जगह लोग अपने माता-पिता का उस दिन पूजन करें।

बापूजी जल्दी बाहर आयें

- श्री मनिंदरजीत सिंह बिट्टा ,
राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय आतंकवाद विरोधी मोर्चा

जो-जो साजिशें बापूजी के खिलाफ की गयी हैं, वे भी आज नहीं तो कल सबके सामने आयेंगी और पता चलेगा कि किन-किन लोगों ने राजनीति के द्वारा या किसी अन्य तरीके से साजिशें की हैं। हम भगवान के आगे प्रार्थना करते हैं कि बापूजी जल्दी बाहर आयें, सच लोगों के सामने आये।

***

भोलानंद ने किया षड्यंत्रकारियों व भ्रष्ट मीडियावालों को बेनकाब

विनोद गुप्ता उर्फ भोलानंद ने हजारों लोगों के सामने आकर षड्यंत्र का पर्दाफाश करते हुए कहा :

मैं आपको सच्चाई बताने के लिए आया हूँ । मेरी आत्मा अंदर से लानत बरसा रही थी कि मैं कब तक छुपाऊँगा । मैंने कहा, मैं अपनी गलती स्वीकार करूँगा जाकर के । इसमें मुझ पर किसीका कोई दबाव नहीं है ।

संस्कृति को नष्ट करने के लिए जो ताकतें लगी हैं, मेरी अब समझ में आया है कि उन लोगों ने मेरे से क्या करवा दिया ! २०१० में मैं आश्रम से निकल गया था, २०१२ में मैंने विरार, मुंबई में अपना योगा सेंटर शुरू किया । जून-जुलाई २०१३ की बात है । उस समय वहाँ महेन्द्र चावला और वीणा नाम की एक औरत - दोनों मुझसे मिले । बापूजी के खिलाफ इन्होंने काफी सारी बातें कहीं, बोले : ''भोला ! अब तुम मुंबई आ गये हो, हम तुमको चमका देंगे ।'' ५-६ दिन के बाद महेन्द्र चावला का फोन आया कि ''देखो, अभी हम ऐसा गेम खेलने जा रहे हैं कि हम सभी मालामाल होंगे और बापू कितना भी जोर लगा लें पर जेल से बाहर कभी नहीं आ पायेंगे ।'' फिर इन्होंने मेरा ब्रेन-वॉश करना शुरू किया ।

जब बापूजी जेल में गये, उसके ४-५ दिन बाद ये लोग मेरे पीछे हाथ धो के पड़ गये । उन्होंने मुझे एक प्रसिद्ध ज्योतिषी से मिलवाया । मुंबई में उनका काफी नाम है, उन्होंने मेरा हाथ देखकर कहा : ''तुम्हारे तो सितारे चमकनेवाले हैं, तुम ५-७ दिनों में ५-६ करोड़ के मालिक बननेवाले हो ।''

मैंने कहा : ''५-६ करोड़ तो क्या, मैंने कभी ५-१० लाख भी नहीं देखे ।''

''आपको पता नहीं है कि मुंबई में रातों-रात लोग अरबोंपति बन जाते हैं ।''

''ठीक है, बताओ ऐसी क्या युक्ति है ?''

तुरंत ही फिर 'इंडिया टीवी' वाला वसीम अख्तर मेरे पास आया । उसने पहले से ही एक मैटर तैयार कर रखा था कि मुझे क्या-क्या बोलना है । उसके बाद अमृत प्रजापति, महेन्द्र चावला, विरार-मुंबई की वीणा, राजू चांडक और भी कई लोग थे जिनके मेरे पास फोन आते थे । इनमें मुख्य था देवेन्द्र जो आजकल दिल्ली में है । देवेन्द्र जो लाइन देता था न, उससे महसूस होता था कि कोई लाइन से बात करवाता है । अपने फोन पर 'चालू रखो' ऐसा बोलता था फिर वाया-वाया करके लाइन जाती थी । चांडाल-चौकड़ी तो ये हैं ही, और भी कई इसमें सम्मिलित हैं । कई तो मीडिया में शामिल हैं । दीपक चौरसिया ने तो ऐसा खेल रच रखा था, वह फोन पर खुद बात नहीं करता था, मुंबई में 'इंडिया न्यूज' का मुख्य मनीष अवस्थी बैठता है, वह रोज गाड़ी लेकर मेरे को लेने आता । कुछ गाड़ियाँ और आगे-पीछे चलती थीं - 'इंडिया टीवी' वाले वसीम अख्तर की, 'न्यूज-२४' वाले की, 'एबीपी न्यूज' वाले की... । ये लोग जब मुझे बुलवाते तो पहले रुपयों की नोटें दिखाते । मैंने जिंदगी में इतनी

नोटें नहीं देखी होंगी जितनी मीडियावाले मुझे दिखाते थे ! वे सूटकेस भर-भर के गाड़ी के अंदर ही बैठे होते थे। उसी गाड़ी में इनके २-३ गुंडे भी बैठे होते थे । फिर इन्होंने मुझे मीरा रोड (मुंबई) में ७०-८० लाख का फ्लैट दिखाया। जब भी कुछ मना करूँ तो मेरे को प्रलोभन दे देंवे, साथ में डराने-धमकाने के लिए गुंडे बैठा रखे थे।

ये जहाँ से लाइव करते हैं वहाँ इन्होंने मुझे अपने पास दो दिन रखा। इन्होंने बहुत सारे मैटर तैयार कर रखे थे, जैसे - 'बापूजी ने १५-१६ लड़कियों के साथ बलात्कार किया और लड़की मार के दबाई हुई है...' आदि। ताकि बापूजी को अधिक-से-अधिक फँसा सकें और वे कारागृह से निकल ही न सकें। मैंने कहा : ''यह नहीं बोलूँगा'' तो फिर उन्होंने प्रेशर देना शुरू किया।

जो डिबेट (न्यूज चैनल पर बहस) होती थी उसमें भी ऐसा ही होता था कि सामनेवाले का चेहरा नहीं दिखता है, वहाँ छोटे-से कमरे में कैमरा होता है। मैं जब बोलता था उस समय फोन आते थे, एक तो दीपक चौरसिया तथा देवेन्द्र आदि के और जो आश्रम से निकले गद्दार लोग हैं उनके। वहाँ हर ५ मिनट का जो ब्रेक होता है, उसमें मैसेज छोड़ते थे और एंकर मुझे बताती कि मुझको क्या बोलना है। ऐसे ही अमृत प्रजापति बताता था। और कुछ मैं भूल जाता तो ये लोग मेरे मोबाइल पर मैसेज छोड़ते थे। मैंने उसकी पूरी कॉल डिटेल न्यायालय में दे दी है। मुझे नींद थोड़ी कम आती थी तो बापूजी के जेल जाने के ७-८ दिन पहले अमृत वैद्य ने मेरे को दवाई भेजी थी। राजू चांडक और महेन्द्र चावला के भेजे हुए लोग दवा लेकर आये थे। वह दवा लेने से जैसा वे बुलवा रहे थे, वैसा मैं बोल रहा था। उसके बाद ये वैसा करवाते रहे मेरे से। इनके लोग वीणा से, महेन्द्र चावला से फोन पर बात करते थे : ''देखो, अधिकतर काम हो चुका है, पैसे तुम्हारे पास आनेवाले हैं।''

मेरे को भूख लगती तो ये आइसक्रीम खिलाते। जो रुपयों की थप्पियाँ ले रखी थीं, उन्हीमें से नोट निकालते। मेरा दिमाग खराब होता कि 'मेरे को पैसा नहीं दे रहे और ५००-५०० की आइसक्रीम खिला रहे हैं व खुद भी खा रहे हैं !' न तो फ्लैट दिया, न पैसे दिये और मेरे को ऐसी जगह धकेल दिया कि आज किसी लायक नहीं रहा हूँ।

टीवी सच नहीं दिखाती है। टीवी पर तो ५०० रुपये का माल ५ हजार रुपये में बिकता है। चैनलवाले लोगों को काम में लेते हैं और फेंक देते हैं तथा हमारी संस्कृति को नष्ट करने में लगे हैं। वीणा का तो शुरू से रहा है, जब मेरे से मिलती तो बोलती कि ''नारायण साँईं के आश्रम की जमीन में मैं बहुत सारे फ्लैट बनाऊँगी और गुप्ताजी ! आपको भी ५-७ फ्लैट दे देंगे।'' जयप्रकाश जो 'इंडिया टीवी' का है, उसने मेरे योगा सेंटर पर जो माताएँ-बहनें योग सीखने आती थीं, उनसे बोला कि ''मुँह पर कपड़ा बाँध के अगर आप बोलोगी न, तो जो पैसा माँगोगी हम देंगे, आपको जो बोलना है हम उसका मैटर तैयार करके देंगे।'' जो समझदार बहनें, बच्चियाँ, माताएँ थीं उन्होंने कहा : ''हम क्यों बोलें ?''

फिर उसने मेरे पर दबाव दिया कि ''कोई पैसे ले-देकर बोल देवे, ऐसे किसीको ला दो।'' अब पता चला कि यह तो कई करोड़ों की गेम खेली गयी है। उसके बाद महेन्द्र चावला, अमृत प्रजापति तथा वीणा, और भी महिलाएँ थीं, उन सबका फोन आया कि ''गुप्ताजी ! आपने बहुत अच्छा काम कर दिया। बस, अब आप सिर्फ जोधपुर में आकर सरकारी गवाह बन जाइये। आपको पुलिस प्रोटेक्शन मिलेगी, ५-६ पुलिसवाले सदा साथ रहेंगे।''

प्रश्न : यदि आपके ऊपर कोई आक्रमण हो या कोई आपको क्षति पहुँचाये तो आपका शक किस पर जा सकता है ?

भोलानंद : इन षड्यंत्रकारी लोगों का यह कहना था कि ''गुप्ताजी ! देखो, आप फँसते हो या हममें से कोई भी अगर पकड़ा गया तो हम एक-दूसरे को गोली मार देंगे या चाकू से वार कर देंगे, ऐसा कुछ कर लेना अथवा हम करवा देंगे। फिर हम लोग केस बना के बापू पर डाल देंगे।'' ऐसी इनकी पूरी प्लानिंग थी। इसलिए मुझे कुछ होता है तो श्रेय उनको ही जाता है।

ये भले कितना भी कुछ कर लें लेकिन बापूजी बिल्कुल निष्कलंक बाहर आयेंगे। बापूजी बिल्कुल निर्दोष हैं ! निर्दोष हैं !! निर्दोष हैं !!! (श्री इन्द्र सिंह राजपूत)

राष्ट्रपति ने गृह मंत्रालय को अग्रेषित किया पत्र

पॉक्सो एक्ट पर पुनर्विचार कर करें बंद

राज एक्सप्रेस, नई दुनिया, जनपक्ष (छिंदवाड़ा)। देश में दामिनी कांड के बाद बने रेप के नये सख्त कानूनों के दुरुपयोग को लेकर शहर के सामाजिक कार्यकर्ता भगवानदीन साहू ने दिनांक ०७-१२-२०१३ को जिला कलेक्टर, छिंदवाड़ा के माध्यम से राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपकर पॉक्सो एक्ट पर पुनर्विचार कर उसे शीघ्र बंद करने की माँग की है।

ज्ञापन में उल्लेख था कि ये कानून महिलाओं की सुरक्षा के लिए लागू किये गये थे लेकिन कानून के लागू हो जाने के बाद से महिलाओं के प्रति होनेवाले अपराध और बढ़ गये हैं। साथ ही देश में इन कानूनों का घोर दुरुपयोग हो रहा है। कुछ गिने-चुने दुष्कर्मियों के कारण देश के ६५ करोड़ पुरुषों के साथ अन्याय हो रहा है। झूठे रेप केसों के बढ़ते आँकड़ों को देखकर सभ्य परिवारों के पुरुषों एवं महिलाओं को डर लग रहा है। इसके कारण कई सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थान अब महिलाओं को नौकरी नहीं दे रहे हैं तथा नौकरी के पेशेवाली महिलाओं के साथ डर के कारण भेदभाववाला व्यवहार किया जा रहा है। यह सब महिलाओं के हित में नहीं है। आज देश में भुखमरी, बेरोजगारी, अशिक्षा का प्रतिशत ज्यादा है। आज भी देश में कई महिलाएँ अपना शरीर बेचकर परिवार का भरण-पोषण करती हैं। इन गरीब महिलाओं को थोड़ा-बहुत पैसे का लालच देकर किसी पर भी झूठा आरोप लगाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। देश में ऐसे कई उदाहरण देखने को मिले हैं। जैसे -

(१) संत आशारामजी बापू : इन्होंने पूरे विश्व में आध्यात्मिक क्रांति लायी एवं करोड़ों-करोड़ों लोगों को दुर्व्यसनों से छुटकारा दिलाया, साथ ही धर्मांतरण पर भी रोक लगायी। इसी वजह से विरोधी लोग इनकी ताक में बैठे थे।

(२) उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश ए.के. गांगुली : ये पश्चिम बंगाल के राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष थे। इन्होंने 2G स्पेक्ट्रम घोटाले में १२२ टेलीकॉम कम्पनियों के लाइसेंस रद्द किये थे, जिससे इन कम्पनियों को अरबों रुपयों का नुकसान सहना पड़ा। शायद इसी वजह से उनके विरोधी लोग इनकी भी ताक में बैठे थे।

ऐसे कई उदाहरण देश के सामने आये हैं। इन सब बातों से श्री साहू ने राष्ट्रपतिजी को अवगत कराया। माननीय राष्ट्रपतिजी ने विषय की गम्भीरता को देखते हुए ७ फरवरी २०१४ को भारत सरकार के गृह मंत्रालय को पत्र क्रमांक पी१/ए/०७०२१४०१०५ के माध्यम से साहूजी के प्रतिवेदन को समुचित कार्यवाही हेतु भेज दिया है, जिसकी एक प्रति आवेदक को भी भिजवायी गयी।

****

संत-सम्मेलन, नासिक

सेनाचार्य श्री नरेशानंदजी महाराज, शुक्रताल : भारत को विश्वगुरु बनने में देर नहीं है और विश्वगुरु बापू आशारामजी ही होंगे । यह भारत के संतों की, राष्ट्रप्रेमियों की आवाज है और मैंने समाचारों में भी पढ़ा कि लंदन तक के लोगों ने इस बात का समर्थन किया है । तो फिर भारत में इन पवित्र संत पर इतना अत्याचार, जुल्म क्यों ?

बापूजी साक्षात् शिवस्वरूप हैं – स्वामी संतोषानंदजी, चित्रकूट

बापूजी साक्षात् शिवस्वरूप हैं । शिव कल्याण के प्रतीक हैं और बापू के सान्निध्य में जो भी एक बार आया, जिसने भी एक बार बापूजी के दर्शनमात्र श्रद्धा से किये, उसके जीवन में उसी दिन से परिवर्तन प्रारम्भ हो जाता है, यह अनेकों का अनुभव है ।

सनातन संस्कृति के वाहक पूज्य बापू ही हैं

– श्री हरिदासजी महाराज वैष्णव सम्प्रदाय

हिन्दुओं को अब एकजुट होना चाहिए । आज हमारे पूज्य संतों, संस्कृति व हमारी भारतीय सनातन धरोहर के ऊपर आक्रमण हो रहा है । आज बापूजी के ऊपर नहीं बल्कि हिन्दू धर्म के ऊपर, हमारी संस्कृति और सारे साधु-संतों के ऊपर लांछन लग रहे हैं ।

पंडित गुरुजी, भागवत कथाकार : भगवान रामजी, कृष्णजी के ऊपर भी कीचड़ उछालनेवाले इस धरती पर पैदा हुए थे तो आज शंकराचार्यजी, प्रज्ञा सिंह और बापूजी के ऊपर आरोप लगते हैं तो यह कोई नयी बात नहीं है । हमारे बापूजी दिव्यत्व प्रकट कराने के लिए हमारे सामने आये हैं ।

आशारामजी बापू ने राष्ट्र को प्रताड़ित होने से बचाया

– श्री धनंजय देसाई, राष्ट्रीय अध्यक्ष, हिन्दू राष्ट्र सेना

भारत देश, जो चरित्र की, माँ-बहनों की पूजा करनेवाला देश है और जिसकी सभ्यता व संस्कृति ही विश्व का कल्याण और रक्षण कर सकती है, उसी भारत को नष्ट करने के लिए दुष्ट कई वर्षों से प्रयास कर रहे हैं। ईसाई मिशनरियों ने अपनी पूरी जिंदगी बरबाद कर दी पिछड़े वर्ग का धर्मांतरण करने में और पूज्य बापूजी जैसे अवतारी पुरुषों ने अपने प्रवचनों से ऐसा क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया कि लाखों की तादाद में ईसाई बने हमारे भाई-बहन घर वापस आ गये, शुद्धिकरण प्रक्रिया हो गयी।

ओड़िशा में लक्ष्मणानंद सरस्वतीजी ने हजारों ईसाई परिवारों का शुद्धिकरण करके घर-वापसी करायी तो उनकी हत्या करके ईसाई मिशनरियों ने अपनी देशद्रोही वृत्ति को प्रकट किया। इसका करारा जवाब एकमात्र जिस विश्वपुरुष, शिखर-पुरुष ने दिया, वे हैं परम पूज्य आशारामजी बापू!

पूज्य बापूजी ने ईसाई बने आदिवासियों को फिर से अपने धर्म में लाया। बापूजी ने समाज को नशे की लत से सावधान किया, छुटकारा दिलाया। कई विषयी वृत्तियों में लिपटे युवाओं को ब्रह्मचर्य की शिक्षा देकर विक्षिप्त करनेवाली दवाइयों का सेवन करना बंद करवा दिया। और इसी तरह अन्य अनेकों प्रकार के सद्भाव, राष्ट्रभक्ति व विश्व-कल्याण के संकल्प हेतु जूझ रहे श्री आशारामजी बापू के ऊपर जो संकट आया है, वह उनके ऊपर आया हुआ संकट नहीं है, वह सौ करोड़ हिन्दुओं के ऊपर आया हुआ संकट है क्योंकि आशारामजी बापू विश्व का कल्याण करने में जुटे हुए सबसे अग्रणी महान संत हैं।

आज भारत माता की संतानें जाति, भाषा, प्रांत और वर्ण छोड़कर हिन्दुत्व की एक ध्वजा के नीचे एकत्रित हो रही हैं। यह देशद्रोहियों के लिए खड़ा हुआ संकट है। बापूजी ने हमारी विचलित हुई दृष्टि को एकाग्र किया है। हमें आध्यात्मिक मार्ग द्वारा राष्ट्रभक्ति की ओर प्रेरित किया है और प्रताड़ित राष्ट्र में बर्बरता व जर्जरता से संघर्ष करने के सामर्थ्य व इच्छाशक्ति की जागृति की है।

श्री पारस अरोड़ा, 'वीर शिवाजी' धारावाहिक के बाल शिवाजी : मैं सबसे पहले संत श्री आशारामजी बापू को प्रणाम करना चाहूँगा, वे हमारे हृदय में हैं!

इस धरती पर कुछ लोग ऐसे हैं जो अपनी ताकत का गलत उपयोग करते हैं, कुछ पापी ऐसे हैं जो हमारी धरती को खराब करना चाहते हैं पर आज भी यह धरती सुंदर है तो हमारे गुरुओं और साधु-संतों की वजह से है, जो कि हमें सही राह दिखाते हैं और अपनी परवाह न करके दूसरों के लिए कार्य करते हैं और हम सबको एकजुट करते हैं।

जिन्होंने अपने जीवन की सब सुख-सुविधा त्यागकर हम लोगों के लिए बहुत कुछ किया है, हमेशा हमें आशीर्वाद दिया है, ऐसे हमारे साधु-संतों के साथ अन्याय हुआ है। मैं चाहूँगा कि सच्चाई की जीत हो और उन सबको न्याय मिले।

****

संतों के ज्ञान से राष्ट्र बलशाली होगा

– श्री मेघन जाधव, 'जय श्री कृष्णा' धारावाहिक के श्रीकृष्ण

आज धरती पर कुछ अधर्मी बोझ बने हुए हैं । वे झूठे हैं और धर्म की रक्षा करनेवालों को पीड़ित करते हैं । धर्म की महिमा हमें कौन सिखाता है ? वे हैं हमारे साधु-संत, जिन्हें हम सद्गुरु कहते हैं, जैसे हमारे बापूजी । वे हमें सदाचरण, बुद्धि, धैर्य और सुशिक्षा प्रदान करते हैं । सोचिये, अगर ये साधु-संत न होते तो क्या होता ? परंतु आज, जो हमें ज्ञान देते हैं ऐसे साधु-संतों को विविध कारणों से प्रताड़ित किया जा रहा है और उनकी अवहेलना की जा रही है । हमारे लिए, हमारे धर्म के लिए यह बात बिल्कुल भी अच्छी नहीं है । साधु-संतों के ऊपर बिना सिर-पैर के इल्जाम लगाना एक फैशन-सा हो गया है । धर्म-रक्षा के लिए साधु-संतों का समाज में रहना अत्यंत आवश्यक है । इन संतों के ज्ञान की वजह से ही हम सशक्त व शक्तिशाली बनेंगे, यह राष्ट्र बलशाली होगा । जब-जब धरती पर अधर्म की प्रधानता होने लगती है, धर्म का पतन होने लगता है, तब-तब श्रीकृष्णजी इन अधर्मियों का विनाश और धर्म की पुनर्स्थापना करने के लिए बापूजी जैसे संतों के रूप में अवतरित होते हैं । सत्य आखिरकार जरूर बाहर आयेगा और संतों की रक्षा होगी, उन्हें न्याय व सम्मान जरूर मिलेगा ।

साध्वी कात्यायनीजी, श्रीराम कथाकार, 'कात्यायनी देवी संस्थान', मुंबई : मैं चाहती हूँ कि सभी लोग भगवान से यह प्रार्थना करें कि 'जल्द-से-जल्द बापूजी हमारे बीच हों और हम उनका दर्शन-सत्संग साक्षात् पा सकें, उनकी वाणी से लाभान्वित हो सकें ।'

श्री अखिलेश तिवारीजी, अध्यक्ष, ब्राह्मण एकता सेवा संस्थान : धर्मांतरणवालों ने षड्यंत्र किया कि बापूजी पर ऐसा आरोप लगाया जाय जिससे सनातन धर्म एकदम से नष्ट हो जाय । लेकिन उन षड्यंत्रकारियों को पता नहीं था कि बापूजी जैसे दिव्य महापुरुष द्वारा ५० साल पहले लगाया गया पौधा आज विशाल रूप धारण कर चुका है । बापूजी तो भले ही जेल में हैं लेकिन आज भी उनके करोड़ों शिष्य उनके दैवी कार्यों में लगे हुए हैं ।

बाबा दाताशाहजी महाराज, अध्यक्ष, भगवान आश्रम सेवादल : हमारे बापू आशारामजी के प्रति हो रहे षड्यंत्र का हमारे हिन्दू भाई-बहन विरोध करते हैं । सभी संगठनों से अपील है कि हमें इकट्ठे होने की जरूरत है । यदि भारत को बचाना है तथा संतों की संस्कृति, शक्ति और मर्यादा को कायम रखना है तो हमारा एक संत आयोग बनना चाहिए और एक राजनीतिक मंच होना चाहिए, जिससे हमें ठीक इंसाफ मिल सके ।

****

साध्वी सरस्वतीजी, भागवत कथाकार : आज पूज्य बापूजी की प्रेरणा से पूरे भारतवर्ष में १७ हजार से अधिक 'बाल संस्कार केन्द्र' हैं, 'महिला उत्थान मंडल' हैं। जगह-जगह पर धर्मांतरण को रोकने के लिए घर-वापसी का कार्यक्रम किया जाता है, गौ-पालन के लिए अनेकों गौशालाएँ हैं। माँ भारती के हृदयस्थल पर जिन्होंने भक्ति की, भगवत्प्रेम की गंगा बहायी, चारों ओर अपने 'हरि ॐ' के संकीर्तन से लोगों को प्रभुरसमय बनाया, ऐसे विराट संत बापूजी की क्या गलती थी ? यही गलती थी कि बापूजी ने लोगों को मांसाहार और शराब से मुक्त करा दिया; उन्हें राष्ट्र और संस्कृति के प्रति निष्ठावान बनाया !

हे माताओ ! आपसे निवेदन है कि अपने पुत्रों को संस्कार दो, अपने बेटों को कहो, 'बेटा ! संतों का अपमान हो रहा है इस धरती पर, अब जागो।'

फिरोज खान, 'महाभारत' धारावाहिक के अर्जुन : जो हमारे हृदय में हैं, हर साल हमारे बीच थे, आज वे पूज्य बापूजी यहाँ हमारे बीच नहीं हैं। क्या कर्तव्य है हमारा ? वे वहाँ रहकर भी हम सबकी जिंदगी में खुशियाँ बाँट रहे हैं, सबको आशीर्वाद का प्रसाद दे रहे हैं।

हम सब जानते हैं कि चाहे गौ हो, नन्हा बालक हो या कोई माई-भाई हो, बापूजी ने सबको पोषित किया है।

अर्जुन ने अपने गुरु की सेवा बहुत की थी, वे सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बन गये। आज आप लोग भी अपने गुरु के प्रति अर्जुन बन जायें तो लक्ष्य को भेदने से आपको कोई रोक नहीं सकता। हम अपने गुरु को बाहर निकाल के रहेंगे।

तेरे वादे की कसम, तुझको आना पड़ेगा।
जो वादा तूने किया है, वो तो निभाना पड़ेगा ॥
तेरे चरणों के सिवाय, कहीं सुख नहीं मिलता बापू !
माथा तेरे चरणों में तो झुकाना ही पड़ेगा ॥
तेरे वादे की कसम...
पढ़-पढ़ के दुनिया के पाठ, थक गये मेरे जोगी !
प्रेम का पाठ अब तुझको पढ़ाना ही पड़ेगा ॥
तेरे वादे की कसम...
रो-रो के आँखों से, आँसू खो गये बापू !
दिल की धड़कन से, जुबाँ को खोलना ही पड़ेगा ॥
तेरे वादे की कसम...

****

संत-सम्मेलन, सूरत

बापू सनातन धर्म की पगड़ी हैं

– महामंडलेश्वर स्वामी प्रेमानंदजी, हरिद्वार

संत आशारामजी बापू तो सनातन धर्म की पगड़ी हैं। बापूजी भले जेल में हैं पर उनका सत्य कभी दबनेवाला नहीं है। कुप्रचार करनेवाले लोग जरूर अपने कर्मों का फल पायेंगे।

गुरुवर्ग का सम्मान होता है और होता रहेगा

– प्रसिद्ध अभिनेता गोविंदा

साधु-संत हमें माँ की तरह ही प्रेम करते हैं। हमें ऐसा मंत्र दे देते हैं जिससे हमारी जिंदगी की तकलीफ दूर हो जाती है। हमें ऐसी राह दे देते हैं जिस राह में काँटें नहीं चुभते हैं। हमें ऐसे न लोगों से मिलवा देते हैं जहाँ पर काल न हो, कष्टहो, दुःख-दारिद्र्य न हो, रोग न हो। ऐसे बहुत-से व्यक्ति मुझे मिला करते हैं जो कहते हैं कि बापूजी के आश्रम की दवाइ खायी तो उसके बाद पता नहीं उसकी कितनी बीमारियाँ दूर हो गयीं। गुरुवर्ग का मान-सम्मान सम्पूर्ण जग में होता है और होता रहेगा।

जब तक सूरज-चाँद रहेगा बापूजी का नाम रहेगा

– श्री आदेशपुरीजी महाराज पठानकोट

जब तक ये सूरज-चाँद रहेंगे तब तक इतिहास में जैसे अन्य महापुरुषों का नाम आता है ऐसे ही बापूजी का नाम आयेगा। आनेवाली पीढ़ियों में यह इतिहास पढ़ाया जायेगा। याद रखो, जब भी धर्म सताया जाता है तो संतों को पीड़ा होती है। जब भी धर्म को बचाया है तो इन संतों ने ही बचाया है।

निम्नलिखित संतों ने भी सूरत व नासिक के संत-सम्मेलनों में उपस्थित होकर पूज्य बापूजी का समर्थन करते हुए संस्कृति-रक्षा का संदेश दिया। संत समिति (छत्तीसगढ़) के अध्यक्ष श्री महंत रामबालकदास महात्यागी, श्री १००८ महामंडलेश्वर स्वामी जालेश्वरजी महाराज (अयोध्या), महामंडलेश्वर स्वामी अनंतानंदजी (हरिद्वार), स्वामी साँईं किरणजी महाराज (शिरडी), अवधूत महामंडलेश्वर स्वामी स्वात्मबोधानंदजी, भारत जागृति मोर्चा के अंतर्राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री घनश्यामानंदजी, स्वामी ॐकारानंदजी महाराज (ओड़िशा), कैलाश आश्रम (ऋषिकेश) के स्वामी वासुदेवानंदजी, रामायण धारावाहिक के 'जाम्बवंत' श्री राजशेखर उपाध्याय, सीताराम कुटीर (झारखंड) के स्वामी अशोकानंदजी।

****

बापूजी ने करोड़ों लोगों को सन्मार्ग में लगाया है

– ज्ञानेश्वर माऊली महाराज भागवत कथाकार

आग लगी आकाश में, झर-झर गिरे अंगार।
संत न होते जगत में, तो जल मरता संसार ॥

जब कंस की सत्ता थी, तब वसुदेव कारागृह में थे। क्या वसुदेवजी गलत थे ? नहीं, फिर भी उन्हें कारागृह में रहना पड़ा था क्योंकि सत्ता थी कंस की। ऐसे ही हमारे बापूजी गलत नहीं हैं फिर भी उन्हें कारागृह में रखा गया है क्योंकि सत्ता...। परंतु

जो सनातन नहीं मिटा कंस की फुफकार से,
जो सनातन नहीं मिटा रावण की हुंकार से।
वह सनातन क्या मिटेगा आज की...

बापूजी ने १७ हजार से अधिक 'बाल संस्कार केन्द्रों' के माध्यम से देश के भावी तरुणों का चरित्र-निर्माण किया है। हम सभी कल भी बापूजी के थे, आज भी हैं और आगे भी रहेंगे।

'पेड न्यूज' पर अंकुश के लिए मीडिया का आत्मसुधार जरूरी : राष्ट्रपति

वेब दुनिया, नई दिल्ली। आजकल मीडिया में 'पेड न्यूज' का प्रचलन बहुत बढ़ गया है, इस पर नाराजगी व्यक्त करते हुए माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने कहा कि ''इस तरह के पतन को रोकने के लिए मीडिया को खुद को सुधारने का तंत्र विकसित करने की जरूरत है। यह जानना अपने-आपमें परेशान करनेवाला है कि कुछ प्रकाशनों ने अपना राजस्व बढ़ाने के लिए 'पेड न्यूज' और इसी तरह की अन्य विपणन रणनीतियों का सहारा लिया।

देश ऐसी नाजुक चुनौतियों का सामना कर रहा है, जो 'ब्रेकिंग न्यूज' और 'खास सुर्खियों' से कहीं आगे हैं। समाचारों को दबा देने की प्रवृत्ति पर भी अंकुश लगाना होगा। आपको प्रभावी वाचक एवं दर्शक के साथ ही दूरदर्शी राष्ट्र-निर्माता भी बनना होगा।

मीडिया की यह जिम्मेदारी और बाध्यकारी दायित्व है कि विचारों पर पूरी निष्पक्षता से बहस हो और सोच को बिना किसी भय अथवा भेदभाव के विकसित होने का मौका मिले ताकि कोई भी राय हमेशा पूरी जानकारी के साथ बने।''

वास्तव में खनिज, नदी आदि देश की सच्ची सम्पत्ति नहीं हैं अपितु ऋषि-परम्परा के पवित्र संस्कारों से सम्पन्न तेजस्वी संतानें ही देश की सच्ची सम्पत्ति हैं। इसलिए संतानप्राप्ति के इच्छुक दम्पतियों को चाहिए कि वे ब्रह्मज्ञानी संतों-महापुरुषों के दर्शन-सत्संग का लाभ लेकर स्वयं सुविचारी, सदाचारी एवं पवित्र बनें। साथ ही उत्तम संतानप्राप्ति के नियमों को जान लें और शास्त्रोक्त रीति से शुभ मुहूर्त में गर्भाधान कर परिवार व देश का नाम रोशन करनेवाली उत्तम संतान को जन्म दें।

गर्भाधान के लिए समय :

* ऋतुकाल (रजोदर्शन के प्रथम दिन से १६वें दिन का काल) के प्रथम तीन दिन मैथुन के लिए सर्वथा निषिद्ध हैं। साथ ही ११वीं व १३वीं रात्रि भी वर्जित है।

* उत्तरोत्तर रात्रियों में गर्भाधान होने पर प्रसवित शिशु की आयु, आरोग्य, सौभाग्य, पौरुष, बल एवं ऐश्वर्य अधिकाधिक होता है।

* यदि पुत्र की इच्छा हो तो ऋतुकाल की ४, ६, ८, १०, १२, १४ या १६वीं रात्रि एवं यदि पुत्री की इच्छा हो तो ऋतुकाल की ५, ७, ९ या १५वीं रात्रि में से किसी एक रात्रि का शुभ मुहूर्त पसंद करना चाहिए।

* रजोदर्शन दिन को हो तो वह प्रथम दिन गिनना चाहिए। सूर्यास्त के बाद हो तो सूर्यास्त से सूर्योदय तक के समय के तीन समान भाग कर प्रथम दो भागों में हुआ हो तो उसी दिन को प्रथम दिन गिनना चाहिए। रात्रि के तीसरे भाग में रजोदर्शन हुआ हो तो दूसरे दिन को प्रथम दिन गिनना चाहिए।

* पूर्णिमा, अमावस्या, प्रतिपदा, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, पर्व या त्यौहार की रात्रि, श्राद्ध के दिन, चतुर्मास, प्रदोषकाल (त्रयोदशी के दिन सूर्यास्त के निकट का काल), क्षयतिथि (दो तिथियों का समन्वयकाल) एवं मासिक धर्म के तीन दिन समागम नहीं करना चाहिए।

* माता-पिता की मृत्युतिथि, स्वयं की जन्मतिथि, नक्षत्रों की संधि (दो नक्षत्रों के बीच का समय) तथा अश्विनी, रेवती, भरणी, मघा व मूल इन नक्षत्रों में समागम वर्जित है।

* दिन में समागम आयु व बल का बहुत ह्रास करता है, अतः न करें। गर्भाधान हेतु सप्ताह की रात्रियों के शुभ समय इस प्रकार हैं :

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
८ से ९	१०.३० से १२	७.३० से ९	७.३० से १०	१२ से १.३०	९ से १०.३०	९ से १२
१.३० से ३	१.३० से ३	१०.३० से १.३०	३ से ४		१२ से ३	

✲ रात्रि के शुभ समय में से भी प्रथम १५ व अंतिम १५ मिनट का त्याग करके बीच का समय गर्भाधान के लिए निश्चित करें।

गर्भधारण के पूर्व कर्तव्य :

✲ दम्पति की स्थिति शारीरिक थकान व मानसिक तनाव से मुक्त हो। परिवार में वाद-विवाद या अचानक मृत्यु की घटना न घटी हो। मन, शरीर व वातावरण स्वस्थ व स्वच्छ हो।

✲ आध्यात्मिकता बढ़े इसलिए दोनों नथुनों से लम्बे, गहरे श्वास लें। भगवत्कृपा, आनंद, प्रसन्नता, ईश्वरीय ओज को भीतर भर के श्वास रोकें, मन में सद्विचार लायें। भगवन्नाम जपते हुए मलिनता, राग-द्वेष आदि अपने मानसिक दोष याद कर फूँक मारते हुए उन्हें श्वास के साथ बाहर फेंकें। गर्भाधान के पूर्व ५ से ७ दिन रोज ७ से १० बार यह प्रयोग करें। शयनगृह हवादार, स्वच्छ, सात्त्विक धूप के वातावरण से युक्त हो। कमरे में अनावश्यक सामान व काँटेदार पौधे न हों। कमरे में अपने गुरुदेव, इष्टदेव या महापुरुषों के श्रीचित्र लगायें तथा रेडियो व फिल्मों से दूर रहें। दम्पति सफेद या हलके रंगवाले वस्त्र पहनें एवं हलके रंग की चादर बिछायें। इससे प्राप्त प्रसन्नता व सात्त्विकता दिव्य आत्माएँ लाने में सहायक होगी।

✲ कम-से-कम तीन दिन पूर्व रात्रि व समय तय कर लेना चाहिए। निश्चित दिन में शाम होने से पूर्व पति-पत्नी को स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहन के सद्गुरु व इष्टदेव की पूजा करनी चाहिए।

✲ दम्पति अपनी चित्तवृत्तियों को परमात्मा में स्थिर करके उत्तम आत्माओं को आह्वान करते हुए प्रार्थना करें : 'हे ब्रह्मांड में विचरण कर रहीं सूक्ष्मरूपधारी पवित्र आत्माओ ! हम दोनों आपको प्रार्थना कर रहे हैं कि हमारे घर, जीवन व देश को पवित्र तथा उन्नत करने के लिए आप हमारे यहाँ जन्म धारण करके हमें कृतार्थ करें। हम दोनों अपने शरीर, मन, प्राण व बुद्धि को आपके योग्य बनायेंगे।'

✲ पुरुष दायें पैर से स्त्री से पहले शय्या पर चढ़े और स्त्री बायें पैर से पति के दक्षिण पार्श्व में शय्या पर चढ़े। तत्पश्चात् निम्नलिखित मंत्र पढ़ना चाहिए :

अहिरसि आयुरसि सर्वतः प्रतिष्ठाऽसि धाता त्वा
दधातु विधाता त्वा दधातु ब्रह्मववर्चसा भव।
ब्रह्मा बृहस्पतिर्बिष्णुः सोमः सूर्यस्तथाऽश्विनौ।
भगोऽथ मित्रावरुणौ वीरं ददतु मे सुतम्।

'हे गर्भ ! तुम सूर्य के समान हो, तुम मेरी आयु हो, तुम सब प्रकार से मेरी प्रतिष्ठा हो। धाता (सबके पोषक ईश्वर) तुम्हारी रक्षा करें, विधाता (विश्व के निर्माता ब्रह्मा) तुम्हारी रक्षा करें। तुम ब्रह्म से युक्त होओ। ब्रह्मा, बृहस्पति, विष्णु, सोम, सूर्य, अश्विनीकुमार और मित्रावरुण, जो दिव्य शक्तिरूप हैं, वे मुझे वीर पुत्र प्रदान करें।'

(चरक संहिता, शारीरस्थानम् : ८.८)

✲ दम्पति गर्भ-विषय में मन लगाकर रहें। इससे तीनों दोष अपने-अपने स्थानों में रहने से स्त्री बीज को ग्रहण करती है। विधिपूर्वक गर्भधारण करने से इच्छानुकूल संतान प्राप्त होती है।

✲✲

अखबारों के झरोखे से...

बापू पर आरोप लगाने वाले ने ही खोली साजिश की पोल

आसाराम बापू के केस में आया सनसनीखेज मोड़

गुरुओं का सम्मान सारे जग में होता रहेगा

लिखकर देते ये मैटर

धर्मांतरण करने वालों ने बापू को फंसाया : शिवा

आशाराम बापू के प्रमुख सेवादार ने किया खुलासा

न्यूज सर्विस/बाड़मेर। आशाराम बापू द्वारा विश्वभर में हिन्दू धर्म को लेकर किये गये कार्य ही उनके लिए मुसीबत का कारण बने और आज धर्मान्तरण करने वाले लोगों की वजह से ही बापू जेल में है। यह कहना है आशाराम बापू के प्रमुख सेवादार शिवा का। राजस्थान हाईकोर्ट द्वारा हाल ही में जमानत मिलने के बाद देश की कई जगहों पर संकीर्तन यात्रा के जरिए बापू के पक्ष में माहौल बनाने का काम कर रहे शिवा ने खास बातचीत के दौरान बताया कि अभी आशाराम बापू को जिस मामले में फंसाया गया हैं वह पूर्व सुनियोजित था। बापू द्वारा ऐसा कोई कृत्य नहीं किया गया। बावजूद इसके कई महीनों से उन्हें सलाखों के पीछे रखा हुआ हैं। शिवा का कहना हैं कि भारत में बड़े-बड़े संतो ने हमेशा संकट देखे हैं। और वह संकट से लड़कर सफल हुए हैं। बापू भी इन दिनों अपने पुत्र नारायण सांई के साथ संकट के दौर में हैं। यह संकट जल्द ही दूर होगा तथा बापू और नारायण सांई सभी आरोपों से मुक्त होंगे। शिवा के मुताबिक कई संत बापू के पक्ष में आगे आये हैं लेकिन धन के प्रभाव के चलते कई मीडिया समूह उनकी खबरें भी नहीं छाप रहे हैं। शिवा ने बताया कि वह गुजरात के कच्छ का रहने वाला हैं। बावजूद इसके उसकी गिरफ्तारी के बाद उसे पाली का बताया गया। उसकी उम्र 32 वर्ष होने के बावजूद पुलिस ने 26 साल की उनकी संतान बताई। जो कि अपने आप में झूठ की पराकाष्ठा है। शिवा के मुताबिक वकीलों द्वारा जल्द ही आशाराम बापू को जमानत दिलवाई जायेगी और कुछ ही महीनों में यह साफ हो जाएगा कि आशाराम बापू द्वारा कुछ भी नहीं किया गया हैं वह सभी आरोपों से मुक्त होकर बाइज्जत बरी होंगे।

बापू बेगुनाह है, निर्दोष साबित होंगे : शिवा

आशाराम को फंसाने के लिए राजनैतिक शक्तियों पर षड्यंत्र का आरोप

भास्कर न्यूज • बाड़मेर

आस्था पर फर्क नहीं

हम निर्दोष साबित करेंगे

मैं शादीशुदा नहीं हूं

धर्मांतरण करनेवालों ने बापू को फँसाया

दैनिक नवज्योति, बाड़मेर । संत आशारामजी बापू द्वारा विश्वभर में हिन्दू धर्म को लेकर किये गये कार्य ही उनके लिए मुसीबत का कारण बने और आज धर्मांतरण करनेवालों की वजह से ही बापू जेल में हैं। यह कहना है आशारामजी बापू के प्रमुख सेवादार शिवा का । शिवा ने खास बातचीत के दौरान बताया कि बापू को जिस मामले में फँसाया गया है, वह पूर्व सुनियोजित था।

पूज्य बापूजी बेगुनाह हैं निर्दोष साबित होंगे : शिवा

दैनिक भास्कर, बाड़मेर। संत आशारामजी बापू के शिष्य शिवा का कहना है कि बापूजी के खिलाफ पिछले ८ सालों से साजिश रची जा रही थी कि इन्हें फँसाया कैसे जाय ? हिन्दुओं को ईसाई बनाये जाने का आशारामजी की ओर से विरोध किये जाने के बाद कुछ लोगों ने षड्यंत्र रचने की तैयारी की।

भक्तों की आस्था नहीं हुई कम : शिवा

जनता में बापू के प्रति आस्था व श्रद्धा में कोई फर्क नहीं पड़ा है बल्कि लोगों में बापूजी के प्रति पहले से ज्यादा सहानुभूति है।

मैं शादीशुदा नहीं हूँ

शिवा ने यह भी कहा कि ''मुझ पर लगे सारे आरोप झूठे हैं। मेरा परिवार पाली (राज.) में है - ऐसा बताया गया जबकि मैं कच्छ-भुज (गुज.) में रहता हूँ। ३२ साल मेरी उम्र है तो २६ साल का बेटा मुझे कैसे हो सकता है ?''

दूध आखिर सफेद ही रहता है :शिवा

दैनिक भास्कर, जयपुर । शिवा का कहना है कि बापू एकदम पाक-साफ हैं । उन पर लगाये गये आरोप पूरी तरह से राजनीति से प्रेरित हैं तथा देर-सवेर सत्य सामने आयेगा तथा संत के साथ ऐसा घिनौना षड्यंत्र रचनेवाले तत्त्वों का पर्दाफाश होगा। दूध में कितना भी पानी डाला जाय लेकिन उसका रंग सफेद ही रहता है । इसी तरह करोड़ों भक्तों में लोकप्रिय, साफ छविवाले बापूजी पर मिथ्या आरोप भले ही लगाये जायें पर उनकी छवि पर कोई असर नहीं होगा । बापू पर ऐसे आरोपों से उनकी छवि खराब होती तो इस संकीर्तन यात्रा में भक्तों का सैलाब नजर नहीं आता।

संत आशाराम बापू निर्दोष हैं : शिवा

मरू पत्रिका । शिवा ने कहा कि बापू निर्दोष हैं और जल्द ही न्यायालय द्वारा निर्दोष साबित होकर बाहर आयेंगे।

मतदान जरूर करना चाहिए

- पूज्य बापूजी

आप नेता हैं तो अपने इलाके के लोगों का खयाल रखो और आप जनता हैं तो अच्छे नेता को वोट (मतदान) देने का खयाल करो। वोट का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए, वोट जरूर देना चाहिए। हमारा कोई भी साधक अपना वोट देने का काम नहीं छोड़े क्योंकि साधक वोट देगा तो अच्छे आदमी को पहचान के देगा। इसलिए हमारे कोई भी मंत्रदीक्षित साधक हैं तो वे खुद तो वोट दें और अपने परिचित से भी वोट दिलवायें ताकि अच्छे लोगों की पसंदगी का कोई अच्छा आदमी आये।

हालाँकि कई लोग कहते हैं, नेता का चुनाव करना आसान नहीं है लेकिन फिर भी अन्य नेताओं की अपेक्षा जो सत्संगी है, उसमें कुछ सद्गुण है तब तो सत्संग में आता है।

कुछ तो अच्छाई है, भले ही १०० प्रतिशत सोना नहीं है तो ९० प्रतिशत से भी गहना बन जायेगा। बाकी तो चुनाव में कई लोग एक-दूसरे पर आरोप लगाते रहते हैं लेकिन सत्संगी नेता होता है तो जरा ठीक रहता है। अच्छे लोग आगे आयें।

अच्छे आदमी को अपना कर्तव्य निभाने में उसकी अच्छाई साथ देती है। बुरा आदमी अपना कर्तव्य निभायेगा तो बुरी आदतों के कारण बुराई की तरफ का कर्तव्य निभायेगा। इसलिए संसार का संतुलन रखना ह तो भगवान और देवता भी अच्छे लोगों को मदद करते हैं।

ऋषि प्रसाद प्रश्नोत्तरी

नीचे दिये गये रिक्त स्थानों के उत्तर खोजने हेतु 'ऋषि प्रसाद' के इसी अंक को ध्यान से पढ़िये। उत्तर अगले अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

(१) साधारण व्यक्ति .... की वासना से कर्म करता है।

(२) आजकल मीडिया में .... का प्रचलन बहुत बढ़ गया है।

(३) दुर्जनता तभी तक हावी रहती है जब तक सज्जन अपने बल-बुद्धि पर विश्वास रखकर .... नहीं होते।

(४) .... उस उपजाऊ भूमि की तरह हैं, जिसमें जो जैसा बीज बोयेगा उसको वह अनंत गुना होकर मिलेगा।

(५) कुप्रचार के समय ही .... भी होता है तो कुप्रचार का इतना प्रभाव नहीं रहता।

'ऋषि प्रसाद' घर-घर पहुँचानेवालों का विश्व युगों-युगों तक ऋणी रहेगा

- श्री धनंजय देसाई, राष्ट्रीय अध्यक्ष, हिन्दू राष्ट्र सेना

आज परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापू के ऊपर चरित्रहनन के जो झूठे, दुष्ट आरोप लगाये गये हैं, उनका भेदन करने का सामर्थ्य, उस लांछन को धोने का सामर्थ्य अगर आज किसी शास्त्रीय धर्मग्रंथ में है तो वह एकमात्र शास्त्र-ग्रंथ है 'ऋषि प्रसाद'। इसके माध्यम से करोड़ों हिन्दुओं तक भारत का गत वैभव, गत वैभवशाली परम्पराएँ पहुँचती हैं । देशवासियों एवं विश्वमानव का उत्थान हो, उनकी पीढ़ियों का उत्थान हो, उनके कर्मदोष का

निवारण होकर वे भक्तिमार्ग में सफल हों, ऐसे कुछ प्रयोग, नुस्खे, सूक्ष्म बिंदु इस धर्मशास्त्र में बड़ी सरलता व सुलभता से बताये जाते हैं। जो अति पिछड़ा वर्ग है, अति पिछड़ा क्षेत्र है और समाज का जो आखिरी, अंतिम व्यक्ति है, उस तक भी 'ऋषि प्रसाद' जाने के कारण ही समाज-उत्थान की शुरुआत हो चुकी है।

यह ऋषि प्रसाद निर्माण करनेवाले पूज्य बापू, उनके साधक और जिन्होंने घर-घर तक इस प्रसाद को पहुँचाया है उनको भी खूब-खूब धन्यवाद है।

यह कोई पुस्तिका नहीं है, यह एक धर्मग्रंथ है। आज कलियुग में यदि हमें हमारे राष्ट्र, धर्म, संस्कृति की और हमारे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक अधिकारों की रक्षा करनी है तो जो एकमात्र माध्यम आज हमारे सामने सरलता और सुलभता से उपस्थित है, वह है 'ऋषि प्रसाद'।

मैं देश और देश से बाहर रहनेवाले सभीको, जो भी विश्व का कल्याण चाहते हैं, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को मानते हैं, उनसे निवेदन करता हूँ कि वे सभी 'ऋषि प्रसाद' के प्रचारक बनें, वाचक बनें और विश्व-कल्याण का सामर्थ्यशाली परिवर्तन लायें।

मैं आभार प्रकट करता हूँ उन साधकों का, जो गली-कूचों में जाकर, घर-घर जा के, कष्ट सहन कर, परिस्थिति की परवाह न करते हुए केवल एक उत्तम हेतु से, देशभक्ति के संकल्प से, पूर्ण शक्ति से इस कार्य में अपने-आपको झोंक देते हैं। 'ऋषि प्रसाद' घर-घर में पहुँचानेवाले उन साधकों का हिन्दू समाज, पूरा देश और विश्व युगों-युगों तक ऋणी रहेगा।

'ऋषि प्रसाद' महान सत्साहित्य है

- अवधूत महामंडलेश्वर श्री स्वात्मबोधानंद पुरीजी, निरंजनी अखाड़ा
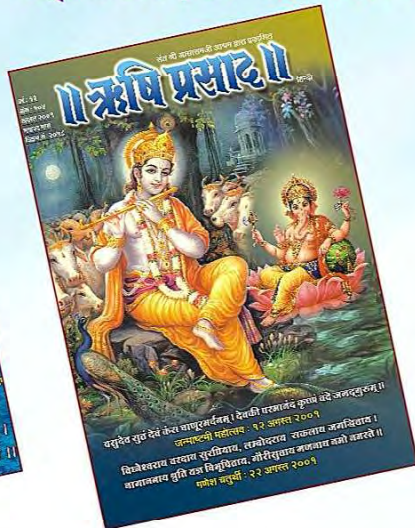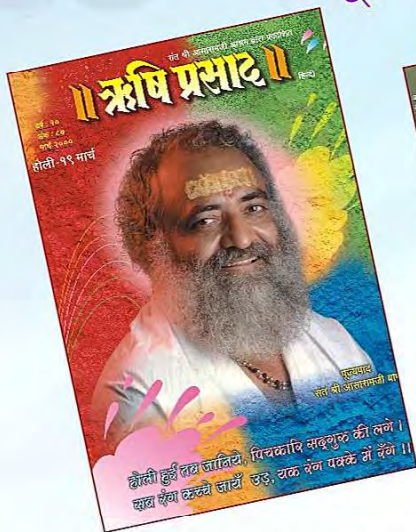
ऋषि प्रसाद' कोई साधारण पुस्तक नहीं अपितु एक महान सत्साहित्य है। मैकाले की शिक्षा पद्धति ने इस पवित्र देश के इतिहास को कलंकित कर दिया, हमारी सभ्यता और संस्कृति को मलिन करने का दुष्प्रयास किया। इस कुटिल चाल को यदि किसी महापुरुष ने पहचाना तो वे हैं पूज्य आशारामजी बापू। उनके हृदय में यह संकल्प हुआ कि पवित्र 'ऋषि प्रसाद' के माध्यम से हमारी सभ्यता और संस्कृति पर छायी हुई मलिनता, कलंकित हुआ इतिहास बदला जा सकता है।

आज लाखों घरों में करोड़ों लोगों तक यह ऋषि प्रसाद जा रहा है तो मैं चाहूँगा कि करोड़ों-करोड़ों घरों में यह पहुँचे ताकि हमारे देश की पीढ़ियाँ, देश की जनता हमारे गौरवशाली इतिहास, संस्कृति व सभ्यता और पर्वों के महत्त्व को समझ सकें। आज हजारों साधक इसके माध्यम से सुप्रचार में लगे हैं।

हम संत समाज जो किसी कोने में भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं, हमारे हृदय में यह पीड़ा है, यह कसक है कि हमारी संस्कृति सबल हो। लेकिन अब हमारे हृदय में अत्यंत प्रसन्नता हो गयी है कि हमारी इस पीड़ा को, हमारे संकल्प को बापूजी समझ चुके थे और बापूजी ने हमारे जैसे हजारों संतों के संकल्प को 'ऋषि प्रसाद' के माध्यम से पूर्ण कर दिया है। जो महानुभाव 'ऋषि प्रसाद' जन-जन तक पहुँचाने की सेवा कर रहे हैं, उनके बच्चे, नाती-पोते आगे बोल उठेंगे कि 'वाह ! हमारे पिताजी, दादाजी इतने महान थे और महान हैं कि जब पूज्य गुरुदेव को विधर्मियों व राष्ट्रद्रोहियों ने बदनाम किया और देश विडम्बनाओं में फँस रहा था, उस समय हमारे पिताजी, दादाजी, नानाजी ने 'ऋषि प्रसाद' वितरण के माध्यम से देश और समाज की इतनी सेवा की और करते रहे हैं !'

आश्रम ने की हमलावरों के विरुद्ध कड़क कानूनी कार्यवाही की माँग

पिछले काफी समय से बापूजी, उनके परिवार एवं आश्रम को बदनाम करने के लिए असामाजिक तत्त्वों द्वारा सुनियोजित षड्यंत्र किये जा रहे हैं।

ऐसे ही एक षड्यंत्र के अंतर्गत हाल ही में कुछ असामाजिक तत्त्वों द्वारा फरियादी पक्ष के गवाहों एवं उनके परिजनों पर हमले किये गये और प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा प्रसारित किया गया कि उनमें बापूजी, नारायण साँईं और आश्रम का हाथ है। ऐसी तमाम खबरों का आश्रम पूरी तरह से खंडन करता है और जाहिर करता है कि 'ऐसे तमाम अमानवीय कृत्यों से पूज्य बापूजी, श्री नारायण साँईं एवं आश्रम का कोई लेना-देना नहीं है।'

पहले भी जब जाँच अधिकारी डीसीपी शोभा भूतड़ा (सूरत) को धमकी मिली थी तो इसी प्रकार आश्रम का नाम गलत तरीके से उछाला गया था। तब भी आश्रम ने ऐसी खबरों का पूरी तरह से खंडन किया था और इस प्रकार के गैर-कानूनी कार्यों में लिप्त असामाजिक तत्त्वों के विरुद्ध कड़क कानूनी कार्यवाही की माँग करते हुए सूरत के पुलिस कमिश्नर को एक अर्जी दी थी। उसके बाद जब धमकी देनेवाला पकड़ा गया तब पुलिस जाँच में भी यह बात सिद्ध हो गयी थी कि ऐसी धमकी देनेवाले लोगों का आश्रम के साथ कोई लेना-देना नहीं है।

गौरतलब है कि ऐसे कृत्य आम जनता, पुलिस, सरकार और न्यायपालिका में नकारात्मक पूर्वाग्रह उत्पन्न करने के लिए किये जा रहे हैं। पूज्य बापूजी व नारायण साँईंजी को जमानत न मिले इसलिए ऐसा आतंकभरा माहौल सुनियोजित ढंग से बनाया जा रहा है, ऐसा हमारा स्पष्ट रूप से मानना है और इसकी पुष्टि षड्यंत्रकारियों के गिरोह के पूर्व सदस्य भोलानंद के वक्तव्य द्वारा भी हो चुकी है। भोलानंद ने १६ मार्च २०१४ को सूरत में हजारों लोगों के सामने कहा था कि ''षड्यंत्रकारियों ने मुझे कहा था कि हम एक-दूसरे को गोली मार देंगे या चाकू से वार कर देंगे और फिर केस बना के बापू पर डाल देंगे।''

भोलानंद का यह बयान इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि यह सब षड्यंत्रकारियों की ही करतूत है और सदैव विश्वशांति का संदेश फैलानेवाले तथा पिछले ५० वर्षों से मानव-उत्थान के सेवाकार्यों में लगे पूज्य बापूजी व उनके आश्रम ऐसे मानवता-विरुद्ध कार्यों से सर्वथा निर्लेप हैं।

इन सभी महत्त्वपूर्ण तथ्यों को देखते हुए पुलिस निष्पक्ष रूप से जाँच-पड़ताल करे और हमलों में लिप्त लोगों के विरुद्ध सख्त कानूनी कदम उठाये। साथ ही संबंधित अधिकारियों से विनती है कि पूज्य बापूजी, श्री नारायण साँईंजी व आश्रमों तथा फरियादी पक्ष के गवाहों व उनके परिजनों को पर्याप्त पुलिस रक्षण दिया जाय। इस संबंध में आश्रम ने सूरत पुलिस कमिश्नर से पत्र द्वारा कार्यवाही करने की माँग भी की है।

उल्लेखनीय है कि पूर्व में भी आश्रम पर इस प्रकार के झूठे आरोप लगाये गये थे। वर्ष २००८ में जब आश्रम के साधकों पर आश्रम के आसपास रहनेवाले लोगों पर हमला करने के आरोप लगाये गये थे, तब भी इसी प्रकार कई मीडियावालों ने उन बेबुनियाद आरोपों को खूब तूल दिया और कई बेगुनाह साधकों को ६ महीने तक जेल में रहना पड़ा। बाद में जब गांधीनगर सत्र न्यायालय में सुनवाई हुई तो सभी आरोपों को पूरी तरह से खारिज करते हुए साधकों को बाइज्जत बरी कर दिया गया था। इसके अलावा तांत्रिक विधि के बेबुनियाद आरोपों को सर्वोच्च न्यायालय ने खारिज कर दिया था। - श्रीर.सी. मिश्र

रेप के खिलाफ नये कानून से बढ़े झूठे केस

– सना शकील, नई दिल्ली, नवभारत टाइम्स, २२/०२/२०१४

दिल्ली गैंग रेप केस (निर्भया प्रकरण) के बाद यौन-अपराधों के खिलाफ कानून को और सख्त बनाने से झूठे मामलों की संख्या और बढ़ गयी। आँकड़े बताते हैं कि १६ दिसम्बर २०१२ के बाद दिल्ली में ट्रायल कोर्ट में झूठे रेप केसों में फँसाये जानेवाले आरोपियों के दोषमुक्त होने के मामले बढ़े हैं। २०१२ में ४६% आरोपी दोषमुक्त हुए लेकिन २०१३ के शुरुआती ८ महीनों में ही यह आँकड़ा ७५% पर जा पहुँचा। सूत्र बताते हैं कि आरोपियों के दोषमुक्त होने का यह आँकड़ा इस साल भी ज्यादा ही रहेगा।

ङ्गनिर्भया केस' के मेन प्रॉसिक्यूटर्स में से एक ए.टी. अंसारी इसे दुःखद प्रचलन मानते हुए कहते हैं कि "कई मामलों में तथाकथित पीड़िताएँ बाद में इस अपील के साथ सामने आती हैं कि उन्होंने गुस्से और गलतफहमी की वजह से मुकदमा दर्ज कराया था।" एक वरिष्ठ महिला वकील ने कहा कि "झूठे मुकदमों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। नये कानून की 'अस्पष्ट' व्याख्या की वजह से ही इसका गलत इस्तेमाल हो रहा है।"

विशेषज्ञों का मानना है कि संशोधित कानून 'अस्पष्ट' होने के कारण उसका गलत रूप से इस्तेमाल हो रहा है। एक सीनियर प्रॉसिक्यूटर ने कहा : "दोषमुक्त होने के ९०% मामलों में तथाकथित पीड़िताएँ और आरोपी व्यक्ति के बीच आपसी दुश्मनी जैसी बातें सामने आयी हैं।"

झूठे मामले को दर्ज कराने के अन्य कारणों में जबरदस्ती वसूली, जायदाद (प्रॉपर्टी) विवाद आदि कारण भी शामिल हैं।

इस साल जनवरी में अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश श्री विरेंद्र भट्ट ने झूठे मामले में फँसाये गये व्यक्तियों को क्षतिपूर्ति देने की वकालत भी की।

(न्यायाधीश की विस्तृत टिप्पणी हेतु पढ़ें 'ऋषि प्रसाद', फरवरी २०१४ का पृष्ठ ५)

विडम्बना यह है कि कानून की रहम का आजकल तथाकथित पीड़िताएँ बेहद नाजायज फायदा उठा रही हैं। वे न्यायालय की ओर से भयमुक्त होने के कारण निर्दोष लोगों पर बिना सिर-पैर के लांछन लगाने में तनिक भी नहीं हिचकिचाती हैं।

इन यौन-अपराधों की दायर होनेवाली झूठी शिकायतों पर फास्ट ट्रैक कोर्ट भी चिंता जाहिर कर चुकी है। बीते साल जुलाई में एक ७५ साल के वृद्ध को रेप के आरोप से मुक्त किया गया, उस पर उसकी नौकरानी ने जायदाद हड़पने के लालच में बलात्कार का आरोप लगाया था। तब फास्ट ट्रैक कोर्ट ने अनुभव किया था कि राजधानी 'रेप कैपिटल' होने की बदनामी झेल रही है क्योंकि झूठे रेप केस दर्ज किये जाने की संख्या बढ़ गयी है। इस मामले में कथित पीड़िता ने बाद में माना था कि उसका उद्देश्य आरोपी की जायदाद को हड़पना था।

यौन-अपराधों पर नियंत्रण के लिए बनाये गये नये कानूनों के दुरुपयोग को लेकर सामाजिक कार्यकर्ता श्री भगवानदीन साहू (छिंदवाड़ा) के पत्र के विषय की गम्भीरता को देखते हुए राष्ट्रपति ने उसे गृह मंत्रालय को अग्रेषित कर दिया है, जिसमें पॉक्सो एक्ट पर पुनर्विचार कर बंद करने की माँग की गयी है।

गर्मियों में क्या करें, क्या न करें ?

इस ऋतु में वात का शमन करनेवाले तथा शरीर में जलीय अंश का संतुलन रखनेवाले मधुर, तरल, सुपाच्य, हलके, ताजे, स्निग्ध, रसयुक्त, शीत-गुणयुक्त पौष्टिक पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

आहार : पुराने साठी के चावल, दूध, मक्खन तथा गाय के घी के सेवन से शरीर में शीतलता, स्फूर्ति और शक्ति आती है । सब्जियों में लौकी, कुम्हड़ा (पेठा), परवल, हरी ककड़ी, हरा धनिया, पुदीना और फलों में तरबूज, खरबूजा, नारियल, आम, मौसमी, सेब, अनार, अंगूर का सेवन लाभदायी है।

नमकीन, रूखे, बासी, तेज मिर्च-मसालेदार तथा तले हुए पदार्थ, अमचूर, अचार, इमली आदि तीखे, खट्टे, कसैले एवं कड़वे रसवाले पदार्थ न खायें।

कच्चे आम को भूनकर बनाया गया मीठा पना, नींबू-मिश्री का शरबत, हरे नारियल का पानी, फलों का ताजा रस, ठंडाई, जीरे की शिकंजी, दूध और चावल की खीर, गुलकंद तथा गुलाब, पलाश, मोगरा आदि शीतल व सुगंधित द्रव्यों का शरबत जलीय अंश के संतुलन में सहायक है।

धूप की गर्मी व लू से बचने के लिए सिर पर कपड़ा रखना चाहिए एवं थोड़ा-थोड़ा पानी पीते रहना चाहिए। उष्ण वातावरण से ठंडे वातावरण में आने के बाद तुरंत पानी न पियें, १०-१५ मिनट के बाद ही पियें। फ्रिज का नहीं, मटके या सुराही का पानी पियें।

विहार : इस ऋतु में 'प्रातः पानी-प्रयोग' अवश्य करना चाहिए । वायु-सेवन, योगासन, हलका व्यायाम एवं तेल मालिश लाभदायक हैं।

रात को देर तक जागना और सुबह देर तक सोये रहना त्याग दें । अधिक व्यायाम, अधिक परिश्रम, धूप में टहलना, अधिक उपवास, भूख-प्यास सहना तथा स्त्री-सहवास - ये सभी इस ऋतु में वर्जित हैं।

गर्मियों के लिए सरल प्रयोग

अम्लपित्त शांत करने के लिए
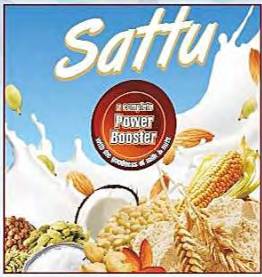
(१) जौ, गेहूँ या चावल का सत्तू मिश्री के साथ खायें।

(२) भोजन के बाद आँवले का रस पियें।

(३) शहद, केला, अदरक, धनिया आदि सेवनीय हैं।

(४) रात को ३ से ५ ग्राम त्रिफला चूर्ण गुनगुने पानी के साथ लें।

घमौरियाँ ठीक करने के लिए

(१) घमौरियों पर मुलतानी मिट्टी का लेप करने अथवा गाय का गोबर मलने से ठंडक मिलती है तथा चुभन व खुजली मिटती है।

(२) घमौरियों पर राख मलें।

नकसीर का इलाज

(१) दूर्वा और आँवला ठंडे पानी में पीसकर मस्तक पर लेप करने पर नाक से खून गिरना बंद होता है।

(२) प्याज का रस नाक में डालें ।

(३) देशी गाय के घी को ठंडे पानी से ७ बार धोकर मस्तक पर लेप करें।

शरीर की जलन दूर करने के लिए

(१) जौ के सत्तू में मिश्री मिलाकर खायें।

(२) ठंडा पानी पियें तथा आँवले के पानी में महीन वस्त्र भिगोकर ओढ़ें।

(३) धनिया रातभर ठंडे पानी में भिगो दें। प्रातः घोंट-छानकर मिश्री के साथ पियें।

गौमाता की अटूट श्रद्धा

संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद के मुख्य द्वार पर एक गौमाता हर दिन सुबह की संध्या-आरती के बाद तथा शाम की संध्या के पहले आती हैं और घंटों खड़ी रहती हैं। लोग भी हैरानी से देखते हैं कि जब से बापूजी कारागृह में गये हैं तभी से पड़ोस के गाँव से यह गाय आकर हर दिन इसी तरह खड़े-खड़े कुछ संदेश देना चाहती है । मानो कह रही हो : 'बापूजी ! मेरे कान आपका संदेश सुनने को तरस गये हैं। मेरी आँखें आपको देखने को तरस रही हैं । आप कब आओगे ?' और उसकी आँखों से अश्रुधाराएँ बहती रहती हैं।

धन्य हैं गौमाता और उनकी अटूट श्रद्धा ! ये गौमाता गुरु-दरबार में हाजिरी देने में कोई दिन नागा नहीं करती हैं। एक दिन जब शाम की संध्या-आरती के बाद एक माताजी आश्रम से वापस घर जा रही थीं तो उस गौमाता को सहलाते हुए माताजी ने कहा कि "हे गौमाता ! बापूजी को जल्दी बुलाओ न !" तो गाय ने दोनों कान खड़े कर लिये और उसकी आँखों से अश्रुधाराएँ बहने लगीं।

ऐसी ही एक घटना है वर्ष २००९ की, जब अहमदाबाद आश्रम में आकर कई निर्दोष आश्रमवासियों एवं साधकों को पुलिस ले गयी थी तो कई लोगों ने देखा कि आसपास के कबूतरों तथा पक्षियों ने दाना चुगना ही बंद कर दिया था। २ दिन बाद जब साधक वापस आये, तब पक्षियों ने दाना चुगना शुरू किया था।

'बुफे सिस्टम' नहीं, भारतीय भोजन पद्धति है लाभप्रद

आजकल सभी जगह शादी-पार्टियों में खड़े होकर भोजन करने का रिवाज चल पड़ा है लेकिन हमारे शास्त्र कहते हैं कि हमें नीचे बैठकर ही भोजन करना चाहिए। खड़े होकर भोजन करने से हानियाँ तथा पंगत में बैठकर भोजन करने से जो लाभ होते हैं वे निम्नानुसार हैं :

खड़े होकर भोजन करने से हानियाँ	बैठकर (या पंगत में) भोजन करने से लाभ
(१) यह आदत असुरों की है। इसलिए इसे 'राक्षसी भोजन पद्धति' कहा जाता है।	(१) इसे 'दैवी भोजन पद्धति' कहा जाता है।
(२) इसमें पेट, पैर व आँतों पर तनाव पड़ता है, जिससे गैस, कब्ज, मंदाग्नि, अपचन जैसे अनेक उदर-विकार व घुटनों का दर्द, कमरदर्द आदि उत्पन्न होते हैं। कब्ज अधिकतर बीमारियों का मूल है।	(२) इसमें पैर, पेट व आँतों की उचित स्थिति होने से उन पर तनाव नहीं पड़ता।
(३) इससे जठराग्नि मंद हो जाती है, जिससे अन्न का सम्यक् पाचन न होकर अजीर्णजन्य कई रोग उत्पन्न होते हैं।	(३) इससे जठराग्नि प्रदीप्त होती है, अन्न का पाचन सुलभता से होता है।
(४) इससे हृदय पर अतिरिक्त भार पड़ता है, जिससे हृदयरोगों की सम्भावनाएँ बढ़ती हैं।	(४) हृदय पर भार नहीं पड़ता।
(५) पैरों में जूते-चप्पल होने से पैर गरम रहते हैं। इससे शरीर की पूरी गर्मी जठराग्नि को प्रदीप्त करने में नहीं लग पाती।	(५) आयुर्वेद के अनुसार भोजन करते समय पैर ठंडे रहने चाहिए। इससे जठराग्नि प्रदीप्त होने में मदद मिलती है। इसीलिए हमारे देश में भोजन करने से पहले हाथ-पैर धोने की परम्परा है।
(६) बार-बार कतार में लगने से बचने के लिए थाली में अधिक भोजन भर लिया जाता है, फिर या तो उसे जबरदस्ती ठूँस-ठूँसकर खाया जाता है जो अनेक रोगों का कारण बन जाता है अथवा अन्न का अपमान करते हुए फेंक दिया जाता है।	(६) पंगत में एक परोसनेवाला होता है, जिससे व्यक्ति अपनी जरूरत के अनुसार भोजन लेता है। उचित मात्रा में भोजन लेने से व्यक्ति स्वस्थ रहता है व भोजन का भी अपमान नहीं होता।
(७) जिस पात्र में भोजन रखा जाता है, वह सदैव पवित्र होना चाहिए लेकिन इस परम्परा में जूठे हाथों के लगने से अन्न के पात्र अपवित्र हो जाते हैं। इससे खिलानेवाले के पुण्य नाश होते हैं और खानेवालों का मन भी खिन्न-उद्विग्न रहता है।	(७) भोजन परोसनेवाले अलग होते हैं, जिससे भोजनपात्रों को जूठे हाथ नहीं लगते। भोजन तो पवित्र रहता ही है, साथ ही खाने-खिलानेवाले दोनों का मन आनंदित रहता है।
(८) हो-हल्ले के वातावरण में खड़े होकर भोजन करने से बाद में थकान और उबान महसूस होती है। मन में भी वैसे ही शोर-शराबे के संस्कार भर जाते हैं।	(८) शांतिपूर्वक पंगत में बैठकर भोजन करने से मन में शांति बनी रहती है, थकान-उबान भी महसूस नहीं होती।

आ जाओ मेरे राम...

दिवाली के दीप अनजले, सूनी रह गयी होरी।
आस की ज्योत सँजोये मन में, राह तके रंग झोरी ॥
आ जाओ फिर कर दो दिवाली होली इक ठाम...
आ जाओ मेरे राम ! आ जाओ मेरे राम !!

सात महीने ऐसे बीते हैं लाखों युगों समान,
बरस रही हैं करोड़ों आँखें, तरस रहे हैं प्रान।
लुट गयी दिल की दुनिया, हो गयी नींद हराम,
आ जाओ मेरे राम ! आ जाओ मेरे राम !!

माता बिन ज्यों बालक भटके कौन बँधावे धीर,
तुम तो नाथ हमारे सब कुछ, किसे सुनायें पीर।
और सहा नहीं जाता आओ छोड़ के सारे काम,
आ जाओ मेरे राम ! आ जाओ मेरे राम !!

मन का मंदिर सूना-सूना, सूने-सूने नैन,
तन-मन की सुध खोयी अब तो उजड़ गया है चैन।
पथराई हैं आँखें अब तो बिसर गया आराम,
आ जाओ मेरे राम ! आ जाओ मेरे राम !!

बहुत हुई अब आँखमिचौली आ जाओ भगवन,
मोहनी मूरत, मधुर वचन फिर बरसाओ गुरुराम।
फिर गुलजार करो हे प्रभुजी ! श्री मोटेरा धाम,
आ जाओ मेरे राम ! आ जाओ मेरे राम !!

– साधक परिवार

अखंड सुप्रचार सेवा-यज्ञ

विशेष कार्यक्रमों द्वारा मनाया गया महाशिवरात्रि पर्व

महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर विश्वभर के साधकों द्वारा अपने शिवस्वरूप गुरुदेव की दीर्घायु, शीघ्र दर्शन-सत्संग प्राप्ति तथा भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु किये गये सामूहिक संकल्प, यज्ञ, रात्रि-जागरण एवं पूजन आदि कार्यक्रम ।

मोडासा (गुज.), भुवनेश्वर (ओड़िशा), रायपुर (छ.ग.), करोलबाग-नई दिल्ली, जबलपुर, भोपाल, दमोह (म.प्र.), अहमदाबाद सहित देश के सभी प्रमुख संत श्री आशारामजी आश्रमों में हवन, शिव-पूजन, पूज्य

बापूजी का विडियो सत्संग, जप-ध्यान, रात्रि-जागरण आदि के साथ महाशिवरात्रि मनायी गयी। इस अवसर पर साधकों द्वारा पूज्य बापूजी के उत्तम स्वास्थ्य एवं शीघ्र रिहाई के लिए द्वादश ज्योतिर्लिंगों में हवन, शिव-पूजन तथा रुद्राभिषेक भी किया गया। राजकोट आश्रम (गुजरात) द्वारा महाशिवरात्रि मेले के अवसर पर गिरनार की परिक्रमा करनेवाले भक्तों के लिए भवनाथ तलहटी में ४ दिन तक भंडारा किया गया। यह भंडारा पिछले २२ सालों से हर वर्ष साल में दो बार किया जा रहा है।

महाशिवरात्रि के दिन नासिक में 'धर्म रक्षा मंच' द्वारा आयोजित संत-सम्मेलन में संत-समाज तथा समाज के बुद्धिजीवियों ने एकजुट होकर बापूजी के खिलाफ किये गये षड्यंत्र का विरोध करते हुए संस्कृति-रक्षण हेतु सामूहिक संकल्प लिया।

अखंड सुप्रचार

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''बड़े धनभागी हैं वे सत्शिष्य जो तितिक्षाओं को सहने के बाद भी अपने सद्गुरु के ज्ञान और भारतीय संस्कृति के दिव्य कणों को दूर-दूर तक फैलाकर मानव-मन पर व्याप्त अंधकार को नष्ट करते रहते हैं। ऐसे सत्शिष्यों को शास्त्रों में पृथ्वी पर के देव कहा जाता है।''

बापूजी के इन्हीं वचनों को चरितार्थ करते हुए साधकों द्वारा देशभर में विभिन्न सुप्रचार सेवाएँ अखंड रूप से जारी हैं।

दिल्ली व गाजियाबाद के साधकों द्वारा निकाली जा रही 'अखंड सुप्रचार यात्रा' को १७० से भी ज्यादा दिन

हो चुके हैं। इसमें सुख-शांतिप्रद भगवन्नाम प्रभातफेरियाँ, संकीर्तन यात्राएँ निकाली जा रही हैं, जिनमें जन-जन को पर्चों, सीडी, सत्साहित्य आदि बाँटकर षड्यंत्र की सच्चाई से अवगत किया जाता है।

जोधपुर, बाड़मेर, पाली (राज.), करोल बाग-नई दिल्ली, गढ़वा (झारखंड), गोरेगाँव-मुंबई, अकोट जि. अकोला, आलंदी व हडपसर जि. पुणे, अंबाजोगाई व गेवराई जि. बीड, दौंड व जेजुरी जि. पुणे, जलगाँव जामोद जि. बुलढाना, लातूर, परभणी, परली वैजनाथ जि. बीड, उरूली कांचन जि. पुणे (महा.), रायपुर (छ.ग.), मुंगरा बादशाहपुर जि. जौनपुर (उ.प्र.), जयपुर (राज.), रुड़की (उत्तराखंड), ग्वालियर, इंदौर, देवास

(म.प्र.), भुवनेश्वर (ओड़िशा), अहमदाबाद आदि स्थानों पर संकीर्तन यात्राएँ निकाली गयीं। देशभर में कई स्थानों पर प्रतिदिन व अन्य कई स्थानों पर गुरुवार व रविवार को नियमित रूप से प्रभातफेरियाँ निकाली जा रही हैं।

बापूजी की रिहाई के लिए जंतर-मंतर, दिल्ली में पिछले साढ़े सात महीनों से (२५ अगस्त से) लगातार धरना प्रदर्शन चालू है।

पुणे के साधकों द्वारा पिछले ४ महीनों से चलाये जा रहे सुप्रचार अभियान से लोगों में जागृति आ रही है और वे स्वयं 'ऋषि प्रसाद' व सुप्रचार की सीडी आदि ले रहे हैं। इससे साधकों का उत्साह बढ़ रहा है और अब इस अभियान में अधिकाधिक साधक शामिल हो रहे हैं। सूरत व बोईसर (महा.) में विशाल 'ऋषि प्रसाद' सम्मेलनों का आयोजन हुआ।

पुस्तक मेला

प्रगति मैदान, दिल्ली में 'अंतर्राष्ट्रीय बुक फेयर' में लगा आश्रम का पुस्तक स्टॉल लोगों तक सच्चाई पहुँचाने का अच्छा माध्यम बना। पूरे पुस्तक मेले में भगवे रंगवाली 'बापूजी निर्दोष हैं' अंकित टोपी पहने हुए लोग बड़ी संख्या में नजर आ रहे थे।

कोल्हापुर (महा.) में विकलांगों में व्हील-चेयर का वितरण किया गया।

'विश्व महिला दिवस' पर महिला जागृति अभियान

पूज्य बापूजी की प्रेरणा से चल रहे 'महिला उत्थान मंडलों' द्वारा 'विश्व महिला दिवस' के उपलक्ष्य में महिला जागृति व सशक्तिकरण हेतु विशेष कार्यक्रम आयोजित हुए। इनके माध्यम से नारी सशक्तिकरण के लिए पूज्य बापूजी द्वारा दिये गये महत्त्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला गया, साथ ही महिलाओं की समस्याओं को सुलझाने के लिए मार्गदर्शन दिया गया।

औरंगाबाद, गोंदिया व अहमदाबाद में नारी सुरक्षा हेतु बैठक व जंतर-मंतर, दिल्ली में 'महिला प्रतिभा विकास सभा' हुई। जयपुर, कानपुर, कंधकेलगाँव जि. बालंगीर (ओड़िशा), लखनऊ, पटना आदि स्थानों में भगवन्नाम-संकीर्तन यात्राएँ निकालकर तथा यवतमाल, लुधियाना, जालंधर, लखनऊ आदि स्थानों में ज्ञापन देकर महिलाओं ने पूज्य बापूजी पर चल रहे षड्यंत्र का विरोध किया।

जोधपुर में साध्वी रेखा बहन तथा रायपुर व बेलौदी जि. दुर्ग (छ.ग.) में साध्वी कृष्णा बहन द्वारा महिलाओं को अपने जीवन को उन्नत बनाने हेतु मार्गदर्शन दिया गया।

होली पर्व

होली के शुभ अवसर पर पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्श किया हुआ पलाश के फूलों का रंग प्रसाद रूप में पाकर जोधपुर, अहमदाबाद, सूरत आदि आश्रमों में साधक-भक्त झूम उठे। होली पर्व पर सभी प्रमुख आश्रमों में साधकों ने होलिका-दहन व महारात्रि का जागरण करके जप-ध्यान किया तथा पूज्य बापूजी के उत्तम स्वास्थ्य व शीघ्र रिहाई के लिए प्रार्थना की। सूरत आश्रम में होली पर्व के निमित्त हजारों साधकों की उपस्थिति में विशाल संत-सम्मेलन व १०८ कुंडी विष्णुयाग वैदिक विधि से किया गया।

रासायनिक रंगों की हानियों एवं 'प्राकृतिक वैदिक होली रंगोत्सव' के लाभों को बतानेवाला पर्चा (पैम्फलेट) देश की सभी प्रमुख भाषाओं में लाखों की संख्या में बाँटा गया। होली पर साधकों ने जोधपुर जेल को आश्रम की तरह सजा के वहीं बैठकर जप-ध्यान का लाभ लिया था।

चेटीचंड महोत्सव

पूज्य बापूजी के बताये अनुसार इस वर्ष भी साधकों ने चैत्री नूतन वर्ष (३१ मार्च) अर्थात् गुडी पड़वा पर हवन-यज्ञ, जप-ध्यान तथा परहित के सेवाकार्यों से नववर्ष की शुरुआत की। कई शहरों में साधकों द्वारा कीर्तन यात्राएँ निकालकर समाज को भारतीय संस्कृति के अनुसार नववर्ष मनाने का संदेश दिया गया। पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई एवं उत्तम स्वास्थ्य हेतु चैत्री नवरात्रि (३१ मार्च से ८ अप्रैल) के दौरान अहमदाबाद आश्रम में ९ दिवसीय वैदिक 'शतचंडी महायज्ञ' का आयोजन हुआ। चैत्री नवरात्रि के दौरान इसी प्रकार के हवन-यज्ञ आदि कार्यक्रम अन्य कई आश्रमों में भी हुए। भगवान झूलेलाल के अवतरण दिवस (१ अप्रैल) 'चेटीचंड पर्व' पर अहमदाबाद आश्रम में देश के प्रसिद्ध संतों एवं प्रतिष्ठितों की उपस्थिति में विराट संत-सम्मेलन सुसम्पन्न हुआ। चेटीचंड पर्व पर देश के कई स्थानों पर कीर्तन यात्राएँ भी निकाली गयीं।

'हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट' ने राष्ट्रपति के नाम दिया ज्ञापन

'हिन्दू यूनाइटेड फ्रंट' ने राष्ट्रपति के नाम जालंधर के एडीसी को ज्ञापन सौंपा। इसमें कहा गया है कि 'पूज्य बापूजी को एक षड्यंत्र के तहत फँसाया गया है।' फ्रंट की महिला शाखा ने सेमिनार में बापूजी को फँसाये जाने का विरोध किया।

'ऋषि प्रसाद' स्मृतिचिह्न का विमोचन करते हुए अभिनेता गोविंदा

'ऋषि प्रसाद' पत्रिका पढ़ते हुए...

श्री मुकेश खन्ना
(शक्तिमान, भीष्म पितामह आदि किरदार निभानेवाले)
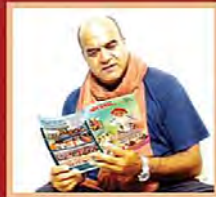
श्री सुरेन्द्र पाल
(द्रोणाचार्य, दक्ष प्रजापति आदि किरदार निभानेवाले)

साध्वी कात्यायनी
(श्रीराम कथावाचक, कात्यायनी संस्थान)

'ऋषि प्रसाद' अभियान का शुभारम्भ करते हुए ह.भ.प. योगेशजी महाराज

देशभर में निकल रही हैं सुख-शांतिप्रद भगवन्नाम संकीर्तन यात्राएँ, प्रभातफेरियाँ एवं सुप्रचार अभियान, जिनमें लोगों को बापूजी की निर्दोषता से अवगत कराया जा रहा है।

चेटीचंड महापर्व पर श्री झूलेलाल शोभायात्रा, जिसकी पूर्णाहुति अहमदाबाद आश्रम में आकर हुई।

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org देखें।

निर्दोष पूज्य बापूजी की रिहाई के लिए जगह-जगह चल रहे हैं संत-सम्मेलन

RNP. No. GAMC 1132/2012-14
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2014)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/12-14
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2014)
RNI No. 48873/91
DL (C)-01/1130/2012-14
WPP LIC No. U (C)-232/2012-14
MH/MR-NW-57/2012-14
'D' No. MR/TECH/47.4/2014

जिनमें बड़ी संख्या में संत-समाज, प्रतिष्ठितों, सामाजिक संगठनों के प्रमुखों एवं जागरूक जनता की उपस्थिति रही।

अहमदाबाद

सूरत

नासिक

पूज्य बापूजी की रिहाई हेतु राष्ट्रपतिजी को ज्ञापन देते हुए संतों का प्रतिनिधि मंडल।

'ऋषि प्रसाद' सम्मेलन, सूरत

'ऋषि प्रसाद' सम्मेलन, बोईसर (महा.)

Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month. * Posting at ND PSO on 18th & 19th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 24th & 25th of E.M.